हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2015 वर्ष 13 अंक 12

माबूद तो अल्लाह है

या रब करम हो तेरा रोज़ी हलाल खाऊँ
पेशा मेरा हो जाइज़ रोटी हलाल पाऊँ
खेती हो या तिजारत, हो नौकरी कि सनअ़त
लग कर करूँ मैं मेहनत, सब में हुनर दिखाऊँ
हासिल करूँ मैं पैसे, हासिल करूँ मैं रोटी
घर वालों को खिला कर औरों को भी खिलाऊँ
रोज़ी कमा के खाओ, औरों को भी खिलाओ
यह बात मैं पते की, हर एक को बताऊँ
माबूद तो अल्लाह है, उसके नबी मुहम्मद
यह बात सच्ची पक्की, हर एक को सुनाऊँ
या रब नबी पे तेरे लाखों सलाम भेजूं
असहाब को भी उनके उसमें सदा मिलाऊँ

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
कैसा था पहले मेल मिलाप	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	13
रहमत की करिश्मा साजियाँ	मौलाना अबुल कलाम आजाद रह0	16
हिन्दू संस्कृति का एक सीख प्रद	ग्रहीत	18
इस फूल को ऐ लोगो क्यों (पद्य)	मौ0 मु0 खालिद फैसल नदवी गाज़ीपुरी	19
फिक्ही इख्तिलाफ की हक़ीक़त	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	28
नबी करीम सल्लल्लाहु	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	31
दीवाली का उल्लू	शमीम इक़बाल खाँ	35
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़र:

अनुवाद– या न देखा तूने उस आदमी को जो एक शहर पर से गुज़रा, और वह (शहर) अपनी छतों पर गिरा पड़ा था, बोला क्यों कर ज़िन्दा करेगा अल्लाह इसको मर जाने के बाद, फिर अल्लाह ने उस आदमी को सौ साल मुर्दा रखा फिर उसको उठाया[1] और कहा तू कितनी देर मरा पड़ा रहा, तो कहा मैं रहा एक दिन से कुछ कम[2], कहा नहीं बल्कि तू सौ साल तक रहा, अब देख अपनी खाने और पीने की चीज़ों को कि वह सड़ी गली नही, और देख अपने गधे को, और हमने तुझ को नमूना बनाना चाहा लोगों के वास्ते, और देख हड्डियों की ओर कि हम इनको किस तरह उभार कर जोड़ देते हैं फिर उन पर गोश्त पहनाते हैं[3] फिर जब उस पर यह हाल जाहिर हुआ तो कह उठा कि मुझ को मालूम है कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है[4](259)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. वह शख़्स हज़रत उज़ैर अलै0 पैगम्बर थे और पूरी तौरात उनको याद थी, बुख़्त नस्सर काफिर बादशाह था, उसने बैतुल मक़दिस को वीरान किया और बनी इस्राईल में से बहुत लोगों को क़ैद करके ले गया उनमें हज़रत उज़ैर अलै0 भी थे जब क़ैद से छूट कर आये तब हज़रत उज़ैर अलै0 ने राह में एक वीरान शहर देखा उसकी गिरी हुई इमारत देख कर अपने जी में कहा कि यहां के सारे रहने वाले मर गये, कैसे अल्लाह उनको ज़िन्दा करेगा, और यह शहर फिर आबाद होगा, उसी जगह उनकी रूह क़ब्ज़ हुई और उनकी सवारी का गधा भी मर गया सौ वर्ष तक उसी हाल में रहे और किसी ने न उनको वहां आ कर देखा न उनकी ख़बर हुई, उस मुद्दत में बुख़्त नस्सर भी मर गया और किसी बादशाह ने उस मुद्दत में बैतुल मक़्दिस को आ कर आबाद किया और उस शहर को भी खूब आबाद किया, फिर सौ वर्ष के बाद हज़रत उज़ैर अलै0 ज़िन्दा किये गये उनके खाने पीने का सामान उसी प्रकार उनके पास रखा हुआ था उनका गधा जो मर चुका था और उसकी बोसीदा व सड़ी गली हड्डियां अपनी हालत पर रखी हुई थी उसको भी उनके सामने ज़िन्दा किया गया और उस सौ वर्ष में बनी इस्राईल क़ैद से छूट कर शहर में आबाद भी हो चुके थे हज़रत उज़ैर अलै0 ने ज़िन्दा हो कर आबाद ही देखा।

2. जब हज़रत उज़ैर मरे थे उस समय कुछ दिन चढ़ा था और जब ज़िन्दा हुए तो अभी शाम न हुई थी तो यह समझे कि अगर मैं यहां कल आया था तो एक दिन हुआ और अगर आज ही आया था तो एक दिन भी पूरा न हुआ।

3. हज़रत उज़ैर अलै0 के सामने वह सब हड्डियां

शेष पृष्ठ .....38.... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

मुजाहिद की फजीलत और आप सल्ल० की तमन्ना

जन्नत का शौक़–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि एक शख़्स ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर मैं राहे खुदा में क़त्ल किया जाऊँ तो मेरा ठिकाना कहाँ होगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जन्नत में, बस उन्होंने अपने हाथ की सब खजूरें ज़मीन पर डाल दीं और दुशमनों में घुस गये फिर शहीद हो गये।

(मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके अस्हाब मुश्रिकों से पहले बद्र पहुंच गये, जब दुशमन भी आ गये, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तक मैं हुक्म न दूं कोई भी आगे न बढ़े, जब दुशमन बिल्कुल क़रीब पहुंच गये, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया (ऐसी जन्नत की तरफ चलो जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है) हज़रत उमैर बिन हुमाम अंसारी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसी जन्नत जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हाँ वह बोले वाह वाह वाह वाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न फरमाया वाह वाह क्यों कहते हो? अर्ज किया खुदा की क़सम इस उम्मीद पर मैंने यह जुम्ला कहा कि मैं भी उस जन्नत वालों में हो जाऊँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम उन्हीं में से हो, यह सुन कर उन्होंने अपने तीर दान से कुछ खुजूरें निकालीं और खाना शुरु किया फिर बोले अगर उस समय तक ज़िन्दा रहा कि यह खजूरें पूरी खा लूं तो यह जिन्दगी बहुत लंबी हुई, यह ख़्याल करके सब खजूरें फेंक दीं और दुशमनों में घुस गये, फिर जंग करते करते शहीद हो गये।

(मुस्लिम)

शहादत का बदला–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप कुछ लोगों को हमारे साथ कर दें ताकि वह हम को कुर्आन और सुन्नत की तालीम दें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसार क़बीले के सत्तर आदमियों को उनके साथ कर दिया जिनको कुर्रा (यानी कारियों) कहा जाता था, उनमें मेरे मामूं "हराम" भी थे, लोग रात को कुर्आन पढ़ते थे और आपस में सीखते सिखाते थे, फिर दिन को मस्जिद में पानी ला कर रखते थे और लकड़ी ला कर बेचते थे उसकी क़ीमत से अह्ले

सुफ्फा और फकीरों को खाना खरीद कर खिलाया करते थे, यह लोग रास्ते ही में क़त्ल कर दिये गये (यानी जहां भेजे गये थे वहां पहुंचने से पहले) उन्होंने कहा ऐ अल्लाह ये पैगाम हमारे नबी को पहुंचा दे कि हम तुझ से मिल गये और हम तुझ से राज़ी हुए और तू हम से राजी हुआ। एक आदमी ने अनस रज़ि0 के मामूं "हराम" को पीछे से ऐसा नेज़ा मारा कि उनके आर पार हो गया, और वह बोले कसम रब्बे क़ाबा की मैं कामयाब हो गया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारे भाई क़त्ल हो गये और उन्होंने क़त्ल होते समय कहा ऐ अल्लाह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह खबर पहुंचा दे कि हम तुझ से मिल गये और हम तुझ से खुश हुए तू हम से खुश हुआ।

(बुखारी–मुस्लिम)

मैदाने जिहाद में जन्नत की खुशबू–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि मेरे चचा अनस बिन नज़र रज़ि0 बद्र की लड़ाई में मौजूद न थे उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि आपको मालूम है कि मैं बद्र की लड़ाई में शरीक न था, अब अगर अल्लाह तआला मुझे मुश्रिकीन के क़िताल के समय हाज़िर कर देगा तो अल्लाह तआला भी देखेगा कि मैं क्या करूंगा, जब उहद में मुक़ाबले का दिन हुआ और मुसलमान तितर बितर यानी अलग अलग हो गये तो उन्होंने कहा ऐ अल्लाह जो कुछ मेरे साथियों ने किया मैं उससे क्षमा चाहता हूं और जो कुछ मुश्रिकीन ने किया उससे भी मुक्त हूं। अचानक सअ़द बिन मुआज़ रज़ि0 सामने आ गये तो वह बोल उठे ऐ मुआज़ रज़ि0 जन्नत, नज़र के रब की क़सम, मैं जन्नत की खुशबू उहद के उसी ओर से पा रहा हूं, हज़रत सअ़द रज़ि0 ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो काम इन्होंने किया वह हक़ीक़त में मुझ से न होता। अनस रज़ि0 कहते हैं कि मैंने अस्सी से कुछ ऊपर निशान तलवार, नेज़े और तीर के अपने चचा के बदन पर देखे और उनको मुश्रिकों ने टुकड़े टुकड़े कर दिया था कि कोई उनको पहचान न सकता था, उनकी बहन ने उनकी उंगली के जोड़ के निशान से उनको पहचाना, अनस रज़ि0 कहते हैं कि यह आयत उतरी है शायद वह ऐसे ही मोमिनीन के बारे में उतरी है।

अनुवादः मुसलमानों में से कुछ मर्द ऐसे भी हैं जिन्होंने उस अ़ह्द व वादे को सच कर दिखाया जो अल्लाह से किया था तो उनमें से कोई ऐसा है कि अपना ज़िम्मा अदा कर चुका और कोई इंतिज़ार में है। और उन्होंने ज़रा सा भी रद्दो बदल नहीं किया ताकि अल्लाह सच्चों को सच्चाई का बदला दे और मुनाफिकों को अल्लाह चाहे सज़ा दे या उनको तौबा की तौफीक़ बख्शे बेशक अल्लाह बख्शिश वाला रहमत वाला है।

❖❖❖

कैसा था पहले मेल मिलाप?

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

एक समय से भारत में अधिकांश मुसलमान अपने वतनी भाइयों (हिन्दू, सिख, ईसाई) के साथ मिलजुल कर रहते हैं, उनके घर पास पास हैं, उनकी दुकानें पास पास हैं, उनके खेत पास पास हैं, आफिसों में उनका साथ है, हर विभाग में वह मिले जुले दिखाई देते हैं, स्कूलों में मिले जुले टीचर हैं, तो मिले जुले विद्यार्थी, तात्पर्य यह है कि हर स्थान पर मुसलमान अपने वतनी भाइयों से कांधा से कांधा मिला कर जीवन यापन कर रहें हैं।

ऐसे में जहां मुसलमान अपने धर्म से अवगत रहे और अपने धर्म पर चलते रहे, इस्लामिक आचरण अपनाए रहे तो अपने पड़ोसियों को प्रभावित करते रहे, अपने पड़ोसियों से अच्छा आदर सम्मान पाते रहे इसलिए कि यह भी अपने पड़ोसी के सम्मान में कभी कोई कमी न करते।

खूब याद है मेरे पिता जी किसान थे वह गेहूँ बोने के लिए खेत तैयार कर रहे थे, ज़मीन मटयार थी ढेले टूट न रहे थे, पिता जी कई बार पाटा फेर चुके थे परन्तु ढेले न फूटे थे, पड़ोस का खेत दीन दयाल यादव का था, वह भी गेहूँ बोने के लिए खेत तैयार कर रहे थे, उनके घर की स्त्रियां तथा बच्चे डपकों से ढेले तोड़ रहे थे उनके खेत के ढेले टूट चुके थे परन्तु जब चाचा दीनदयाल ने देखा कि पड़ोसी का खेत गेहूँ बोने के लिए बन नहीं पाया है तो वह मेरे पिता जी से बोले, भाई इस्हाक़ यह ढेले इस इकहरे पाटे से न टूटेंगे, हमारा चौबरधे वाला पाटा ले आओ, हम भी अपनी गोई तुम्हारे साथ लगा देंगे, इस तरह चौबरधे बाटे से पाटा फेरा जाएगा तो दो ही फेरे में यह ढेले चूर हो जाएंगे। पिता जी ने दीन दयाल चाचा की बात तुरन्त मान ली और जा कर चौबरधा वाला भारी पाटा (सिरावन) उठा लाए, अब चार बैल एक साथ जोड़ दिये गये और भारी पाटे पर जब दो आदमियों ने खड़े हो कर पाटा चलाया तो दो ही फेरों में ढेले चूर हो गये।

यही हाल मेरे पिता जी का था, दीन दयाल चाचा के खेत में जिस सहयोग की आवश्यकता होती तुरन्त जुट जाते, विशेष कर खेत की पशुओं से देख भाल में, चोरों से रखवाली में, मेरे पिता तथा दीन दयाल चाचा में बड़ा प्रेम था उनके बच्चों और हमारे भाइयों में भाइयों की तरह का प्रेम रहता था। यह एक उदाहरण है पूरे गाँव के हिन्दू मुस्लिमों में इसी प्रकार का व्योहार था।

अब तो जैसे पहले के सिद्धान्त और दृष्टिकोण ही बदल गये हैं, पहले कहा जाता था जितनी चादर है उतना ही पाँव फैलाओ परन्तु अब देखने में आ रहा है कि पाँव फैलाओ अथवा सिकोड़ो परन्तु चादर बड़ी करते जाओ,

अब तो परितुष्टि (क़िनाअ़त) के गुण से कोई अवगत ही नहीं है अब तो हाय पैसा की होड़ है। पहले किसान लोग शादी विवाह में दावत खिलाने के लिए हल्दी, धनिया, मिर्च आदि मसाले के अतिरिक्त कोई चीज़ खरीदते न थे शादी के लिए चावल बचा बचा कर रखते घर की सरसों का तेल होता, घर के गेहूँ का आटा होता, अपने खेत का उरद होता, चने की दाल होती शादी विवाह में यही सब खिलाते खाते, और खुश रहते, आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे का सहयोग होता, पहले आटा पीसने की यह इंजिन वाली चक्कियां न थीं, घर की चक्की से आटा तैयार किया जाता और इसमें एक दूसरे का सहयोग मिलता, खूब याद है मेरे घर में एक वलीमा था गाँव के लगभग दस घरों में दस दस पाँच पाँच सेर गेहूँ पहुंचाया गया गाँव की औरतों ने खुशी खुशी आटा पीस कर मेरे घर पहुंचा दिया। वलीमे के दिन चाचा दीन दयाल को अनुमान हुआ कि खाने वाले ज़ियादा हैं, ऐसा न हो इस्हाक़ भाई के यहां चावल कम हो जाए, वह चुपके से आधा बोरा चावल मेरे घर पहुंचा गये और पिता जी से कहा जिस चीज़ की ज़रूरत हो तुरन्त बताना, कुछ कम न होने पाये। वालिद साहिब ने चाचा दीन दयाल का शुक्रिया अदा किया और कहा कि अल्लाह चाहेगा तो कुछ कम न होगा।

यह सहयोग अब देखने को नहीं मिलता इस सबके होते हुए मुझे एक बात खटकती थी वह यह कि उस समय हिन्दू भाइयों के यहां ज़मीन पर बिठा कर पतरी में खाने का रवाज़ था, वालिद साहिब शौक़ से ज़मीन पर बैठ कर खा आते कुज्जा (कूज़ा) में पानी दिया जाता वालिद साहिब भी कुज्जे में पानी पीते, परन्तु हमारे यहां के भोज में कभी दीन दयाल चाचा न खाते, उनके लिए हिन्दू हलवाई की दुकान से पचमेल मिठाई मंगाई जाती उसको खाते।

मार्केट में महमूद और प्रेम की दुकानें बराबर से थीं, दुकानों की बनावट इस प्रकार थी कि दोनों पीछे से एक दूसरे की दुकान में आ जा सकते थे। दोनों थोक का भी व्यापार करते थे और फुटकर का भी। प्रेम की दुकान पर एक थोक का ग्राहक आया और जाड़ों में पहनने वाले एक विशेष ब्रान्ड के दो दरजन टोपे मांगे प्रेम की दुकान में उस ब्रान्ड के टोपे न थे, परन्तु उसे मालूम था कि महमूद की दुकान में वह टोपे उपलब्ध हैं, प्रेम ने अपने आदमी को संकेत दिया कि वह टोपे लाओ, प्रेम का आदमी अन्दर की ओर से गया ग्राहक समझा कि वह स्टोर से लेने गया है, लेकिन वह पीछे से महमूद की दुकान में आया और दो दर्जन टोपे लेकर आ गया और ग्राहक को दे दिया, इसी प्रकार प्रेम महमूद का सहयोग करता, अगर परस्पर इस प्रकार का सहयोग न होता तो ग्राहक यह समझता कि इनके यहां हर सामान नहीं मिलता किसी और दूकान से सम्पर्क करना चाहिए। कई बार ऐसा हुआ कि महमूद अपनी दुकान में अकेला था और नमाज़ का

वक्त आ गया उसे करीब की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाना था, वह अपनी खुली दूकान छोड़ कर नमाज़ पढ़ने चला गया, प्रेम उस की दूकान देखता रहा, इस बीच अगर महमूद की दूकान पर कोई ग्राहक आ गया तो प्रेम ने महमूद की दुकान से ग्राहक को सामान दे कर उसके पैसे अलग रख दिये और महमूद के आने पर उसको दे दिये।

संजय और सलीम के घर पास पास थे, दोनों इन्टर पास थे और दोनों एक आफिस में क्लर्क थे, दोनों में बड़ी मित्रता थी, सलीम का बेटा नसीम और संजय का बेटा राजू दोनों एक स्कूल में आठवीं कक्षा के विद्यार्थी थे, इन दोनों में भी बड़ी दोस्ती थी, एक साथ स्कूल जाते, एक साथ स्कूल से आते, कभी राजू नसीम के बैठके में तो कभी नसीम राजू की चौपाल में देर रात तक होम वर्क करते तथा अगले पाठ का अध्ययन करते, इस बीच राजू की माँ गुड की चाय घर के दूध से तैयार करके पिलाती इसी प्रकार नसीम की माँ भी दोनों को चाय पिलाती, राजू नसीम की माँ की चाय तो पी लेता परन्तु नसीम से कहता कि किसी को बताना नहीं, नहीं तो हिन्दू लड़के मुझे चिढाएंगे, नसीम कहता भाई राजू यह बात तो अच्छी नहीं है, वास्तव में स्वच्छता देखना चाहिए यह छुआ छूत बुरी बात है, राजू कहता मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं और अब तो इसका प्रयास सरकारी स्तर पर चल रहा है। हमारे नेता लोग भी यही कहते हैं, जल्द ही यह छुआ छूत का विकार दूर हो जाएगा।

सलीम और संजय में अब छुआ छूत न था, दोनों दोपहर में मेज़ पर लंच खाते, कभी सलीम का पराठा संजय लपक लेते तो कभी संजय की पूड़ी सलीम झपट लेते। सलीम नमाज़ के पाबन्द थे, उनके आफ़िस से मस्जिद दूर थी वह जुह्र की नमाज़ एक तरफ बोरिया बिछा कर आफिस ही में पढ़ लेते, उनकी नमाज़ का आफिस वालों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता, सलीम के आफिस में पांच लोग काम करते थे, एक रोज लंच के पश्चात सब मिलकर चाय पी रहे थे, इस बीच एक बूढ़े क्लर्क ने कहा, मियां सलीम तुम्हारी नियुक्ति से पहले हम लोग थोड़ा मोड़ा घूस ले लेते थे परन्तु तुम्हारी नमाज़ का हम लोगों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि हम लोगों ने घूस लेना छोड़ दिया, जब भी घूस की बात आई ऐसा लगा कि सलीम का अल्लाह (ईश्वर) देख रहा है। वैसे हमारे वेतन कुछ कम नहीं हैं, बस लालच घूस खिलाता था अब उस से बच गये, सलीम बोला ईश्वर को धन्यवाद, भाइयो घूस लेना तो हमारे विधान में दण्डनीय अपराध है, और इस्लाम तो कहता है कि घूस लेने वाला घूस देने वाला दोनों जहन्नम में जलेंगे। अतः यदि कानून में यह दण्डनीय पाप न होता तो भी हम अल्लाह की नाराज़गी से तथा उसके दण्ड से बचने के लिए घूस को हाथ नहीं लगा सकते थे।

संजय होली के अवसर पर सलीम को पक्वान खाने को बुलाते वह खुशी खुशी जाते और गुझिया, दालभरी, पिचिक्के खा आते, ईद में

सलीम संजय को सिवय्यों की दावत देते, वह आते और क़िवामी तथा दूध की सिवय्यां मेवे जात से पुर शौक से खाते फिर मज़ा बदलने के लिए घुले मटर का चाट और दही बड़े खा के संजय कहते हमारा देश सिवय्यों से अवगत न था, यह मुसलमान भाइयों की देन है, सलीम कहते यद्यपि भारती हैं परन्तु हमारे पूर्वज बाहर से आए थे, इस प्रकार हमारा एक विशेष कल्चर भारत में वजूद में आया हम लोग भी पूड़ी, कचौड़ी, दही बड़े आदि से अपरिचित थे दोनों के मिलन से खान पान पहनावे आदि में एक सर्व प्रिय कल्चर वजूद में आगया अब तो हिन्दू भाई भी बेहतरीन सिवय्यां बनाते और पका कर खाते हैं और मुसलमान तो नाना प्रकार के पकवान पकाते खाते हैं।

एक बार ईद के अवसर पर सलीम ने अपने सभी आफिस वालों को सिवय्यां खाने का निमंत्रण दिया सब ख़ुशी ख़ुशी अस्र की नमाज़ के बाद नियुक्त समय पर आए और बड़े शौक़ से मज़े ले ले कर सिवय्यां खाईं, फुल्कियां खाईं, दही बड़े खाये और स्वादिष्ट चाय पी, परन्तु जो सबसे अधिक आयू वाले सज्जन थे वह आए तो बड़ी खुशी से परन्तु सिवय्यां न खाईं, और सलीम से कहा मियां सलीम बुरा न मानना मैं भक्त हूं मैं आप लोगों के यहां का पका खाना नहीं खा सकता बल्कि हर हिन्दू के यहां का खाना भी नहीं खाता हूँ वैसे मुझे तुम्हारी इस दावत से बड़ी खुशी हुई सलीम ने कहा कोई बात नहीं मैं आप के लिए बंसी लाल हलवाई के यहां से अभी पचमेल मंगवाता हूँ, और थोड़ी ही देर में मिठाई आई, उन सज्जन ने मिठाई खाई और सलीम का शुक्रिया अदा किया।

सलीम उनको चचा कहते थे, सलीम ने कहा चचा जी भक्त तो मैं भी हूं। ईश भक्त हूं। मैं समझता हूं हर एक को ईश भक्त होना चाहिए। और ईश भक्त का अर्थ है ईश्वर का आज्ञाकारी (अल्लाह के हुक्मों पर चलने वाला) हमारे पाक कुर्आन के रूप में अल्लाह का आदेश है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईश्वर के सन्देष्टा हैं, उन्होंने कुर्आन के आदेशों को हम लोगों को बता कर और अमल करके भली भांति समझा दिया है हम ईशभक्त उनको अपना कर जीवन बिताते हैं अतः हम भी भक्त हैं ईशभक्त हैं, आप हमारे बड़े हैं आप भक्त हैं अच्छी बात है ईश्वर आपको अपना भक्त बनाए।

वह सज्जन सलीम की बातों से बहुत प्रभावित हुए और सलीम का शुक्रिया अदा करके जाने की अनुमति मांगी और सलीम ने उनको विदा किया। इस दावत में संजय का बेटा राजू भी था उसने बाद में सलीम से माँग की कि वह उसे हिन्दी में ऐसी पुस्तक दे जिसमें इस्लाम का परिचय हो। सलीम ने उसको "हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में" दी और कहा सबसे पहले इसको पढ़ना और "इस्लाम एक परिचय" दी और कहा उसके बाद इसको पढ़ना, तुम को इस्लाम के विषय में आवश्यक ज्ञान हो जाएगा।

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मिना व अरफ़ार में पूरी इन्सानियत के नाम पैग़ाम—

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया के पालनहार और अल्लाह रब्बुलआलमीन की तरफ़ से पूरी इन्सानियत को सुधार और सफलता के रास्ते पर लाने के लिए नबी बनाए गये, जिन्नात और इन्सान का जो भी फ़र्द जिस जगह और जहां क़ियामत तक होगा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की रहनुमाई का मुहताज है, उसके लिए कामयाबी और इज़्ज़त का रास्ता व सामान इसी में है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबवी तालीम पर अमल पैरा हो कर ज़िन्दगी बसर करे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात से तीन माह पहले अरफ़ात के मैदान में और मिना के क़याम (निवास) में पूरी इन्सानियत को जीने का तरीक़ा सिखलाया, ऐसा तरीक़ा जिसमें कोई इन्सान दूसरे इन्सान के लिए कांटा न बने, खून खराबे से दूर रहा जाए, बालादस्ती (उच्चता) इस्लामी शिक्षा की रहे, अरफ़ात के खुतबे के बारे में मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं:—

"उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लामी बातों को वाज़ेह (स्पष्ट) किया। शिर्क की बुन्यादें ढाह दीं उसमें उन तमाम चीज़ों की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तहरीम (परिवर्ज) फरमाई जिनके हराम होने पर तमाम मज़हब और क़ौमें सहमत हैं, और वह हैं नाहक़ ख़ून करना, माल हड़प करना और आबरूरेज़ी। ज़ाहिलियत की तमाम बातों और राएज बातों को अपने क़दमों के नीचे पामाल कर दिया। जाहिलियत का सूद कुल का कुल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़त्म फरमा दिया और उसको बिल्कुल बातिल (मिथ्या) क़रार दिया औरतों के साथ हुस्नेसुलूक, अच्छा व्यवहार करने की नसीहत की और उनके जो हुक़ूक़ हैं, अथवा उनके ज़िम्मे जो हुक़ूक़ हैं उसकी तफ़सील बयान की और यह बताया कि नियमानुसार खुराक और लिबास, नान, नफ़क़ा उनका हक़ है, उम्मत को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह की किताब के साथ मज़बूती से जुड़े रहने की वसीयत की और इरशाद फरमाया जब तक वह उसके साथ अपने को अच्छी तरह वाबस्ता रखेंगे गुमराह न होंगे"।

मिना के खुतबे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यौमुन्नहर (8 ज़िलहिज्ज़ा) की हुरमत (सम्मान) से आगाह किया और अल्लाह तआला के नज़दीक उस दिन की जो फज़ीलत है उसको बयान किया। दूसरे तमाम शहरों पर मक्का की जो अफज़लीयत और बरतरी है उस का ज़िक्र किया और जो किताबुल्लाह की रोशनी में उनकी क़ियादत करे उसकी इताअत व फरमाबरदारी उन पर वाजिब क़रार दी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी नसीहत फरमाई कि मेरे बाद काफ़िरों की तरह न हो जाना जो एक दूसरे की गर्दन मारते रहते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी हुक्म दिया कि यह सब बातें दूसरों तक पहुंचा दी जाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी इरशाद फरमाया "अपने रब की इबादत करो, पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ो, एक महीना (रमज़ान) के रोज़े रखो और अपने अच्छे हाकिमों की इताअत (आज्ञा पालन) करो अपने रब की जन्नत में दाखिल हो जाओगे। उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों के सामने अल–विदाईया कलिमात भी कहे और इसी वजह से इस हज का नाम हज्जतुल विदा पडा[1]।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन इन्सानियत नवाज़ बातों के साथ साथ यह भी सिखाया कि सब इन्सान एक खुदा के बन्दे हैं और खुदा इन सबका रब और पालनहार है। उसको राज़ी करके ही ज़िन्दगी का चैन व सुकून मिल सकता है। इसीलिए उसके बंदों के लिए यह ज़रूरी है कि अपनी ज़रूरत और तकलीफ में उसी को पुकारें और सिर्फ उसी से इल्तिजा (विनय) करें। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद दुआ करके दुआ का तरीक़ा भी दिखाया।

मौलाना सय्यद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाह अलैहि काबा की मरकज़ियत (केन्द्रीयता) और वहां अमल में आने वाली विश्वव्यापी मानव एकता और उसके असीमित सलामती और अमन के पैग़ाम पर रोशनी डालते हुए लिखते हैं–

"ख़ा–नए–काबा इस दुन्या में आर्शेइलाही का साया और उसकी रहमतों और बरकतों का नुक़तए क़दम है, यह वह आईना है जिसमें उसकी रहमत व गफ़्फ़ारी की सिफ़तें (विशेषताएं) अपना अक्स डाल कर तमाम कुर्रए अर्ज़ (भूखण्ड) को अपनी किरनों से मुनव्वर करती हैं यह वह मम्बा (स्रोत) है, जहां से हक़ परस्ती का चश्मा उबला, उसी ने तमाम दुन्या को सैराब किया। यह रूहानी इल्म व मारफ़त का मतला है जिसकी किरनों ने ज़मीन के कण–कण को रोशनी बख़्शी और यह वह जुगराफ़ी बंधन है जिसमें मिल्लत के वह तमाम अफ़राद बंधे हुए हैं जो मुख़्तलिफ़ मुल्कों और इलाक़ों में बसते हैं, मुख़्तलिफ ज़बानें बोलते हैं, मुख़्तलिफ लिबास पहनते हैं, अलग अलग ढंग में ज़िन्दगी बसर करते हैं मगर वह सबके सब बावजूद फ़ितरी इख़्तिलाफ़ और अन्तर में एक ही ख़ा–नए–काबा के गिर्द चक्कर लगाते हैं और एक ही क़िबले को अपना केन्द्र समझते हैं। और एक ही मक़ाम को उम्मुलकुरा (शहरों की माँ) मान कर वतनियत, क़ौमियत, तमद्दुन व मुआशरत (संस्कृति, सामाजिकता) रंग व रूप और दूसरे तमाम फ़र्कों को मिटा कर एक ही वतन एक ही क़ौमियत (आलेइब्राहीम) एक ही तमद्दुन व मुआशरत (मिल्लते इब्राहीमी) और एक ही ज़बान (अरबी) में मिल जाते हैं और यह वह बिरादरी

1. नबी–ए–रहमत, पृष्ठ 527–528

है जिसमें दुन्या की तमाम क़ौमें और मुख़्तलिफ़ मुल्कों के बसने वाले जो वतनियत और क़ौमियत के लफ़्ज़ों में गिरफ़्तार हैं, एक लम्हा और एक आन में दाखिल होते हैं, जिससे इंसानों की बनाई हुई तमाम जंज़ीरें और क़ैदें और बेड़ियाँ कट जाती हैं और थोड़े दिन के लिए हज के ज़माने में तमाम क़ौमें एक मुल्क में एक लिबास एहराम में एक मक़ाम पर कंधे से कंधा मिलाकर एक क़ौम बल्कि एक खानदान की बिरादरी बन कर खड़ी होती हैं और एक ही बोली में खुदा से बातें करती हैं, यही वहदत (एकता) का रंग है जो उन तमाम भौतिक भेदभाव को मिटा देता है जो इंसानों में लड़ाई झगड़ा, फितना व फ़साद के कारण हैं। इसलिए यह हरम रब्बानी न सिर्फ मअना (अर्थ) में अमन का घर है कि यहां हर क़िस्म की खूंरेज़ी और ज़ुल्म व सितम नारवा (अनुचित) बल्कि इस लिहाज़ से भी अमन का घर है कि तमाम दुन्या की क़ौमों की एक बिरादरी क़ायम करके उनके तमाम ज़ाहिरी भेदभाव को जो दुन्या की बदअमली का सबब हैं, मिटा देता है"।

लोग आज यह ख्वाब देखते हैं कि क़ौमियत व वतनियत की तंगनाईयों (घिरौधों) से निकल कर वह इंसानी बिरादरी के विशाल घेरे में दाख़िल हों। मगर मिल्लते इब्राहीमी की प्रारम्भिक दावत और मिल्लते मुहम्मदी की तज़दीदी पुकार ने सैकड़ो हज़ारों बरस पहले इस ख़्वाब को देखा और दुन्या के सामने उसकी ताबीर पेश की। लोग आज तमाम दुन्या के लिए एक वाहिद ज़बान (इसप्रिन्टो) की ईजाद व कोशिश में लगे हैं मगर खा–नए–क़ाबा की मरकज़ियत (केन्द्रीयता) के फैसले ने आले इब्राहीम के लिए लम्बे समय से इस मुश्किल को हल कर दिया है[1]।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस हज में जो दुआएं की वह बहुत बहुत प्रभावशाली और दिल की गहराईयों से निकलीं। वह एक तरफ अदब व बलाग़त का शाहकार हैं, दूसरी तरफ़ उनसे उनके और अल्लाह तआला के दरमियान तअल्लुक़ की कैफ़ियत पूरी तरह दूसरों पर ज़ाहिर हो जाती है। वह बावजूद अपने परवरदिगार के मुनतखब व महबूब बंदे और उसके बहुत ऊँचे दरजे के पैग़म्बर होने के, अपने को किस क़दर हक़ीर और नातवाँ, बेकस और मोहताज समझते हैं और मुश्किल व हाज़त रवा सिर्फ अल्लाह तआला को ही जान कर उस पर कैसा यक़ीन व अडिग विश्वास रखते हैं।

खास तौर पर वुक़ूफ अरफ़ा में आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम ने जो दुआएं फ़रमाईं वह बड़ी असर अंगेज़ हैं। वह जुमा का दिन था। अव्वल वक़्त नमाज़ अदा की और उससे अस्र की नमाज़ भी मिलाई। इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरफ़ात में जुहर और अस्र की

शेष पृष्ठ.....17...पर

1. सीरतुन्नबी 5/2581–283, सय्यद सुलैमान नदवी

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

इमाम का नमाज़ पढ़ाने की और मुक़तदियों के पढ़ने की विधि–

फिर यदि नमाज़ जेहरी[1] होती है तो वह (अर्थात् इमाम) उच्च स्वर में क़िराअत आरम्भ कर देता है। इस दुआ को पढ़ने के बाद वह सूर–ए–फ़ातिहा पढ़ता है। यह प्रत्येक नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाने वाली सूरा है तथा यह कुरआन मजीद की भूमिका (Preface) और इस्लाम का सारांश है। यह कुरआन मजीद का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला भाग है और इस्लाम में इसका बहुत उच्च स्थान है, अतः इसका यहां अनुवाद नक़ल किया जाता है:–

आरम्भ खुदा के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है। सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो समस्त संसार का पालनहार है। अत्यन्त कृपाशील और दयावान है। उस दिन का मालिक है जिस दिन बदला दिया जायेगा। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही बन्दगी करते हैं, और तुझी से सहायता चाहते हैं। हमें सीधा मार्ग दिखा, उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की, न कि उनका (मार्ग) जिन पर तेरा प्रकोप हुआ और न उनका जो भटक गए।

(आमीन) (सूर–ए–फ़तिहा)

इस सूरा के समाप्त होने पर इमाम और मुक़तदी "अमीन" कहते हैं, जिसका अर्थ है– ऐ अल्लाह! हमारी दुआ क़ुबूल कर। फिर इमाम क़ुर्आन मजीद की कोई सूरा अथवा क़ुर्आन मजीद की कुछ आयतें पढ़ता है। यहाँ पर दो संक्षिप्त सूरतों का अर्थ लिखा जाता है:–

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है–

काल साक्षी है। मनुष्य तो घाटे ही में है, किन्तु वह लोग जो ईमान लाये और अनुकूल कर्म करते रहे, और एक दूसरे को हक़ बात की ताकीद करते रहे और सब्र (धैर्य) की ताकीद करते रहे।

(सूर–ए–अस्र)

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है–

कहो! कि वह (ज़ात पाक जिसका नाम) अल्लाह (है), एक है। अल्लाह बे नियाज़ (निःसपृह) है। न किसी का बाप है और न किसी का बेटा, और कोई नहीं जो उसके बराबर का हो।

(सूर–ए–इख़्लास)

उसके बाद इमाम तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहता है, और सब घुटनों को पकड़ कर झुक जाते हैं, इसको 'रुकू' कहते हैं, इस अवस्था

1. पाँच नमाज़ों में तीन नमाज़ें जेहरी हैं, अर्थात इन नमाज़ों की प्रथम दो रकअतों में सूर–ए–फ़ातिहा और कुरआन मजीद का कुछ अंश उच्च स्वर में पढ़ा जाता है। मग़रिब, इशा तथा फ़ज्र के अतिरिक्त दूसरी सिर्री अर्थात जिनमें तक़बीरों के अतिरिक्त इमाम ज़ोर से कुछ नहीं पढ़ता, वह जुह्र तथा अस्र की नमाज़ें हैं।

में रहते हुए तीन बार या इससे अधिक 'सुबहान रब्बियल अज़ीम' (पवित्र है मेरा महिमावान पालनहार) कहा जाता है। फिर इमाम कहता है "समिअल्लाहु लिमन हमिदा" (अल्लाह ने उसको सुना जिसने उसका गुण गान किया) और लोग थोड़ी देर के लिए सीधे खड़े हो जाते हैं, और मुक़तदी "रब्बना लकल हम्द्" (ऐ हमारे पालनहार! समस्त स्तुति तेरे लिए है) कहते हैं। फिर इमाम "अल्लाहु अकबर" कहते हुए सजदे में जाता है, और मुक़तदी भी उसका अनुसरण करते हैं। सजदे की अवस्था में ललाट तथा नाक भूमि पर होती हैं, दोनों हथेलियां खुली तथा उन्गलियाँ मिली हुई भूमि पर टिकी होती हैं, कुहनियां भूमि से उठी हुई तथा बगलों से अलग होती हैं, घुटने भूमि पर टिके होते हैं। सजदे की अवस्था में तीन बार या इससे अधिक "सुबहान रब्बियल ऑला" (मेरा रब सबसे बुलन्द है) कहा जाता है, इसके बाद "अल्लाहु अकबर" कहते हुए इसी प्रकार दूसरे सजदे में जाते हैं। तदुपरान्त दूसरी रकअत के लिए खड़े हो जाते हैं। इसकी वही विधि है जो पहली रक़अत में गुज़री। इसी पर हर रकअत को अनुमान करना चाहिए। हर दो रकअत के बाद बैठना आवश्यक है, जिसको "क़अदा" कहते हैं। जिस क़अदा के बाद (तीसरी रकअत के लिए) खड़ा होना हो उसमें केवल अग्रलिखित यह वाक्य कहे जाते हैं जो अर्थ सहित प्रस्तुत है:—

अत्तहीय्यातु लिल्लाहि वस्सल वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह। अस्सलामु अलैना व अ़ला इबादिल्ला हिस्सालिहीन अशहदु अल लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु—अन्ना—मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुह। अनुवादः सब सलाम और रहमतें और पाक चीजें खुदा ही के लिए हैं। ऐ अल्लाह के नबी तुम पर खुदा की रहमत और सलाम हो और उसकी बरकत नाज़िल हो, और सलाम हम पर और खुदा के नेक बन्दों पर हो। मैं इक़रार करता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं और मैं इक़रार करता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।

और जिस क़अदा के बाद सलाम फेरना होता है[1], तो उसमें उपर्युक्त वाक्यों के बाद निम्नांकित दुआ भी पढ़ी जाती है।

अल्लाहुम्म सल्ले अला मुहम्मदियुं व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदियुं व अला आलि मुहम्मदिन कमा—बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद।

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसनतौं व फ़िल आख़िरति हसनतौं व क़िना अज़ाबन्नार, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिका मिन अज़ाबि जहन्नम व अऊज़ु

1. जिस क़अदा के बाद खड़ा होना होता है उसे पहला क़अदा और जिस क़अदा के बाद सलाम फेर कर नमाज़ की क्रिया समाप्त हो जाती है, उसे अन्तिम क़अदा कहते हैं। (अनु0)

बिका मिन अज़ाबिल क़ब्र व अऊज़ु बिका मिन फितनतिल महया वल ममात व अऊज़ु बिका मिन शर्रि फ़ितनलित मसीहिद्दज्जाल।

अनुवादः ऐ अल्लाह (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा उनके परिवार पर कृपा (रहमत) अवतीर्ण कर जैसा कि तूने (हज़रत) इब्राहीम तथा उनके परिवार पर अवतीर्ण की निः सन्देह तू समस्त गुणों वाला है। ऐ अल्लाह तू बरकत (सम्पन्नता) अवतीर्ण कर (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर तथा उनके परिवार पर, जैसी बरकत अवतीर्ण की हज़रत इब्राहीम लैहिस्सलाम) पर और उनके परिवार पर। निश्चय तू समस्त गुण वाला है। ऐ अल्लाह! हम को प्रदान कर दुन्या तथा आखिरत में भलाई और जहन्नम के अज़ाब से बचा। ऐअल्लाह बचा मुझको जहन्नम के अज़ाब तथा कब्र के अज़ाब से। ऐ अल्लाह तेरी शरण लेता हूँ जीवन तथा मृत्यु की आज़माइश (परीक्षा) और मसीह दज्जाल की दुष्टता तथा आपदा से।

इसके बाद सलाम फेर दिया जाता है, इमाम कहता है "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" (तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो) और नमाज़ की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। यह नमाज़ के प्रति अति संक्षिप्त परिचय है, जिसका उद्देश्य यह है कि गैर मुस्लिम भाइयों के सम्मुख नमाज़ का ढाँचा और खाका आ जाए और उनको इसके सत्य एवं सार का कुछ अनुमान हो जाए। इससे कोई नमाज़ पढ़ना नहीं सीख सकता और न यह इसका उद्देश्य है। यह बात तो व्यवहारिक शिक्षा और बार बार के निरीक्षण एवं प्रशिक्षण के बिना नहीं आ सकती।

जुमा सप्ताह की ईद और मुसलमानों के यहाँ इस ईद का आयोजन–

शुक्रवार को जुह्र की नमाज़ के बजाय जुमा की विशिष्ट नमाज़ होती है। समय इसका वही है जो जुह्र का है। इसमें एक ओर तो यह कमी कर दी गई है कि चार रकअत फ़र्ज़ के बजाय दो रकअत होती है, दूसरी ओर यह अभिवृद्धि है कि नमाज़ से पहले खुत्बा होता है और नमाज़ जेहरी होती है अर्थात् सूर–ए–फ़ातिहा तथा सूरा हर रकअत में इमाम उच्च स्वर से पढ़ता है। शुक्रवार मुसलमानों के यहां बड़ा शुभ एवं पवित्र दिन है, और वह एक प्रकार से साप्ताहिक ईद है। इस दिन विशेष रूप से स्नान करना और उजले तथा अच्छे वस्त्र धारण करना सुन्नत है। उचित यह समझा गया है कि अधिक से अधिक मुसलमान एक स्थान पर नमाज़ पढ़ें, अतः हर बड़े नगर में एक ऐसी बड़ी मस्जिद का रिवाज पहले से चला आ रहा है, जिसको "जामा मस्जिद कहते हैं, यथा– दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की जामा मस्जिद आदि। मुसलमान नहा धो कर और अगर बीमारी, समय की कमी या किसी और कारणवश ऐसा न हो सका तो यथा सम्भव साफ़ सुथरे ढंग से मस्जिद में पहुंच जाते हैं और दो रकअत या चार रकअत सुन्नत पढ़ कर नमाज़ (फर्ज़) की प्रतीक्षा में बैठ जाते हैं।

❑❑

—देवनागरी लिपि में उर्दू

रहमत की करिश्मा साज़ियाँ

—मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह0)

"बिला शुबहा हमने इन्सान को इस तरह बनाया है कि उसकी ज़िन्दगी मशक़्क़तों से घिरी हुई है" (कुरआन 90—4) इन्सान की मईशत, क़ियाम व बक़ा की जिद्दोजुहद और कशाकश का नाम है, इसलिए कुदरती तौर पर इसका हर गोशा तरह तरह की मेहनतों और काविशों से घिरा हुआ है, और बहैसियत मजमूई ज़िन्दगी इज़तिरारी ज़िम्मेदारियों का बोझ और मुसलसल मशक़्क़तों की आज़माइश है। लेकिन बाईहमा फ़ितरत ने कारखान—ए—मशक़्क़त का ढंग कुछ इस तरह का बना दिया है, और बतीअतों में कुछ इस तरह की खुवाहिशें, वलवले और इनफ़िआलात वदीअत कर दिये हैं कि ज़िन्दगी के हर गोशे में एक अजीब तरह की दिल बस्तगी, मशगूलियत, हमाहमी और सरगर्मी पैदा हो गई है, और यही ज़िन्दगी का इनहिमाक है, जिसकी वजह से हर ज़ीहयात न सिर्फ़ ज़िन्दगी की मशक़्क़तें बरदाश्त कर रहा है, बल्कि इन्हीं मशक़्क़तों में ज़िन्दगी की बड़ी सी बड़ी लज़्ज़त और राहत महसूस करता है। यह मशक़्क़तें जिस कदर ज़ियादा होती हैं उतनी ही ज़ियादा ज़िन्दगी की दिल चस्पी और महबूबियत भी बढ़ जाती है, अगर एक इन्सान की ज़िन्दगी इन मशक़्क़तों से ख़ाली हो जाये तो वह महसूस करे कि वह ज़िन्दगी की सारी लज़्ज़तों से महरूम हो गया और अब ज़िन्दा रहना उसके लिए नाक़ाबिले बरदाश्त बोझ है।

फिर दोखो! कारसाज़े फ़ितरत की यह कैसी करिश्मा साज़ी है कि हालात मुतफावित (अलग—अलग) तबाए मुतनव्वे (स्वभाव विभिन्न) हैं। अशग़ाल मुख़तलिफ़ हैं, अग़राज़ मुतज़ाद हैं, लेकिन मईशत की दिल बस्तगी और सरगर्मी सबके लिए यकसां है और सब एक ही तरह उसकी मशगूलियतों के लिए जोश व तलब रखते हैं, मर्द व औरत, तिफ़लो जवां, अमीरो फ़क़ीर, आलिम व जाहिल, क़वी व जईफ तन्दुरुस्त व बीमार, मुजर्रद व मुतअहिल, हामिला व मुरज़ीआ, सब अपनी अपनी हालतों में मुनहमिक हैं और कोई नहीं जिसके लिए ज़िन्दगी की काविशों में महवियत न हो।

अमीर अपने महल के ऐशो निशात और फ़कीर अपनी बेसरो सामानियों की फ़ाक़ा मस्ती में ज़िन्दगी बसर करता है, लेकिन दोनों के लिए ज़िन्दगी की मशगूलियतों में दिल बस्तगी होती है और कोई नहीं कह सकता कि कौन ज़ियादा मशगूल है, एक ताजिर जिस इनहिमाक के साथ अपनी लाखों रूपये की आमदनी का हिसाब करता है उसी तरह एक मज़दूर भी दिन भर की मेहनत के चन्द पैसे गिन लिया करता है, और दोनों के लिए यकसां तौर पर ज़िन्दगी महबूब होती है, एक हकीम को देखो जो अपने इल्म व दानिश की काविशों में गर्क़ है और एक दहक़ान को देखो जो दोपहर की धूप में बरहना सर हल जोत रहा है, और फिर बताओ! किसके लिए ज़िन्दगी की मशगूलियतों

में ज़ियादा दिल बस्तगी है? फिर देखो! बच्चे की पैदाइश, माँ के लिए कैसी जांकही मुसीबत होती है, उसकी परवरिश व निगरानी किस तरह ख़ुद फ़रोशाना मशक़्क़तों का एक तूलतवील सिलसिला है, ताहम यह सारा मामला कुछ ऐसी ख़वाहिशों और जज़्बों क साथ वाबस्ता कर दिया गया है कि हर औरत में माँ बनने की क़ुदरती तलब है और हर माँ परवरिशे औलाद के लिए मजनूनाना ख़ुद फ़रामोशी रखती है। वह ज़िन्दगी का सबसे बड़ा दुख सहेगी और फिर उसी दुख में ज़िन्दगी की सबसे बड़ी मसर्रत महसूस करेगी, वह जब अपनी मईशत की सारी राहतें क़ुरबान कर देती है और अपनी रगों के ख़ून का एक एक क़तरा दूध बनाकर पिला देती है, तो उसके दिल का एक एक रेशा ज़िन्दगी के सबसे बड़े एहसासे मसर्रत से मअ़मूर हो जाता है।

फिर कारोबारे फ़ितरत के यह तसर्रुफ़ात देखो कि किस तरह नौ–ए–इन्सानी के मुनतशिर अफ़राद इजतिमाई ज़िन्दगी के बन्धनों से बाहम दीगर मरबूत कर दिये गये हैं और किस तरह सिला रहमी के रिशते ने हर फ़र्द को सैकड़ों हज़ारों अफ़राद के साथ जोड़ रखा है।

फर्ज़ करो ज़िन्दगी व मईशत इन तमाम मुअस्सिरात से ख़ाली होती, लेकिन कुरआन कहता है कि ख़ाली नहीं हो सकती थी, इसलिए कि फ़ितरते काइनात में रहमत कार फ़रमा है और रहमत का मुक़तज़ा यही था मईशत की मशक्क़तों को ख़ुशगवार बना दे और ज़िन्दगी के लिए तसकीन व राहत का सामान पैदा कर दे, यह रहमत की करिश्मा साज़ियाँ हैं जिन्होंने रंज में राहत, अलम में लज्ज़त और सख़तियों में दिल पज़ीरी की कैफ़ियत पैदा कर दी।

कठिन शब्दों के अर्थ–

करिश्मा साज़ी= लीलाएं, जिद्दोजुहद= दौड़ धूप, मशक़्क़तों= परिश्रम, कशमकश= संघर्ष, मईशत= जीवनी, तसर्रुफ़ात= अधिकारों, क़ियाम व बक़ा= स्थिरता, मरबूत= बंधा हुआ, काविशों= प्रयासों, खोज, सि–लए–रहमी= सम्बन्धियों से सद्व्यवहार, इज़तिरारी= मजबूरी, मुक़तज़ा= माँग, बई हमा= इस सबके होते हुए, अलम= दुख, वदीअत= प्रदान, दिल पज़ीरी= प्रियता, इनहिमाक= व्यस्तता, ख़ुद फरोशाना= अपने को बेच देना, ज़ीहयात= जीव धारी, ख़ुद फरामोशी= अपने को भुला देना, महरूम= वंचित, अशग़ाल= व्यस्तताएं, मुतज़ाद= प्रतिकूल, विपरीत, मुत–अ–हिल= बीवी बच्चों वाला, मुजर्रद= अकेला, मुरज़ीआ= दूध पिलाने वाली, मुनहमिक= व्यस्त

❖❖❖

जगनायक.....

की नमाज़ें मिला कर पढ़ना सुन्नत फ़रमाया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई घंटे दुआ में मसरूफ रहे। यह सिलसिला सूरज डूबने यानी मग़रिब तक जारी रहा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ व मुनाजात गिड़गिड़ाना और आजिज़ी, और बेबसी, दरमांदगी व बेचारगी के इज़हार में मुनहमिक (लीन) रहे। हाथ उठाये अपने रब्बुलआलामीन से इस तरह मांग रहे थे जैसे भिखारी मांगता है, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

❖❖❖

हिन्दू संस्कृति का एक सीख प्रद उदाहरण

धनवान बनना पाप नहीं, लेकिन धन के लिए पाप करना बुरा है-

एक बादशाह ने अपने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण कर सारे खजाने हथिया लिए। उसके पास अपार दौलत हो गई। एक दनि एक फकीर उसके दरबार में कुछ मांगने गया। बादशाह नमाज अदा कर रहा था। वह प्रार्थना कर रहा था कि मेरे राज्य की सीमा और बढ़े और खूब संपत्ति मिले। थोड़ी देर में फकीर उठ कर चल दिया। सेवकों ने पूछा– 'बादशाह से नहीं मिलोगे?' फ़कीर ने कहा– 'मैं उसे बादशाह समझ मांगने आया था, लेकिन वह तो खुद भिखारी है। मैं छोटा हूँ और वह बहुत बड़ा भिखारी है। मंदिर के पास बैठे हुए भिखारी तो रूपया–दो रूपया में खुश हो जाते हैं, लेकिन मंदिर के अन्दर परमात्मा से मांगने वाले की भूख करोड़ों से भी नहीं भरती। जो खुद भूखा है वह दूसरे को क्या दे सकता है।'

अपनी आवश्यकता से अधिक अपने पास रखने को हमारे यहां पाप कहा गया है। कहते हैं कि जितने से तुम्हारा पेट भर जाए उतने पर ही तुम्हारा अधिकार है। उससे अधिक जो तुम्हारे पास है वह संयोग से तुम्हारे पास है, लेकिन तुम्हारा नहीं है। उसे तुम अपना मान कर पाप का भागीदार बन रहे हो। धनवान बनने की इच्छा तो सबके मन में होती है। लेकिन इतनी सावधानी जरूर बरतो कि उससे सोने की लंका नहीं, बल्कि द्वारिका बने। लंका और द्वारिका दोनों ही सोने की थीं। लेकिन द्वारिका के महल के दरवाजे सुदामा के लिए हमेशा खुले रहते हैं। जब सुदामा अपने मित्र से मिलने द्वारिका गए तो उनके मित्र ने बिना मांगे ही उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की। इसलिए समर्थ व्यक्ति को चाहिए वह गरीबों और उपेक्षितों की समस्याओं और उनकी आवश्यकताओं को समझे और बिना मांगे उनकी सहायता करे। वह सोचे कि आज उसके पास जो कुछ है वह इसी समाज से आया है।

प्रेरणा इससे भी लेनी चाहिए कि सुदामा को आवश्यकता से अधिक मिला, तो उसने सारा का सारा अपने पास ही नहीं रख लिया। उसने पत्नी से कहा कि यह ध्यान रखना कि अब आसपास के घरों में भी किसी बच्चे को भूखा न सोना पड़े। हमारे पास आज जो कुछ है, परमात्मा का प्रसाद है, और प्रसाद अकेले नहीं खाया जाता।

धनवान बनना पाप नहीं, लेकिन धन के लिए पाप करना बुरी बात है। ईमानदारी से कमाओ। धर्म की हानि न हो, इस तरह से धन एकत्र करो। बनाओ सोने की नगरी, लेकिन ध्यान रखो, वह लंका न हो, रावण ने लंका को बसाया नहीं, बल्कि यक्षों से छीना था। अनीति की नींव पर खड़ी लंका को एक दिन जलकर राख होना ही है।

प्रस्तुति सुभाष चन्द्र शर्मा

(नवभारत टाइम्स 17.11.14 से ग्रहीत)

❑❑

इस फूल को ऐ लोगो क्यों आज मसलते हो

—मौ0 मु0 खालिद फैसल नदवी ग़ाज़ीपुरी

मैं जिस से बहलता हूँ तुम उससे ही जलते हो
गुलदस—तए—अरमाँ पे क्यों खाक को मलते हो
इस देश का वासी हूँ यह देश मेरा घर है
मुझ को मेरा हक़ दे दो क्यों हक़ को निगलते हो
सर सैयदो हाली व चकबस्तो कृष्णा चंद्र
क्यों शिब्ली व ग़ालिब की तारीख़ बदलते हो
आज़ादिये भारत में है मेरा बहुत हिस्सा
अब सी—नए—मोहसिन पे क्यों मूंग को दलते हो
जिस गुल की सखावत से भारत की फ़ज़ा महकी
उस फूल को ऐ लोगो क्यों आज मसलते हो
उर्दू ने बवक़्ते सुब्ह आ कर यह सदा दी है
लाशा मेरा तड़पेगा गर रुख को बदलते हो
कुछ जौक़े सलासिल हो तो काम करो बढ़ कर
क्यों सिर्फ तसव्वुर में आकाश पे चलते हो
किस तरह करे फैसल बातों पे यकीं तेरे
मंशूरे इलेक्शन से हर बार फिसलते हो

❖❖❖

फिक़्ही इख़्तिलाफ की हक़ीक़त
(इस्लामिक विधान में मतभेद की वास्तविकता)

—मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इख़्तिलाफी मसाइल में सहाबा का अमल–

हर जमाने के बड़े बड़े उलमा ने इस मौजूअ़ पर बहस की है और इस इख़्तिलाफ की बुन्याद पर तफ़रिक़ा और दुशमनी से रोका है, हज़रत शाह वलीउल्लाह देहलवी रह0 इस इख़्तिलाफ का तज़किरा करते हुए अपनी मअ़रिकतुलआरा किताब "हुज्जतुल्लाहिलबालिग़ा" में लिखते हैं:–

"फुक़हा के बीच इख़्तिलाफ की अक्सर सूरतें और बतौरे खास वह मसाइल जिन में सहाबा के अक़्वाल दोनों तरफ हैं, मसलन तक़्बीराते तशरीक़, ईदैन की तक़्बीरात, हालते एहराम में निकाह, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मनकूल तशह्हुद, बिस्मिल्लाह और आमीन आहिस्ता कहना, इकामत की तक्बीर दो दो बार और एक एक बार कहना और इसी तरह के दूसरे मसाइल, उन सब में सहाबा के दोनों अक्वाल में से किसी एक को तरजीह देना है, इन मसाइल की अस्ल मशरूईयत में सलफ का इख़्तिलाफ नहीं था बल्कि उनका इख़्तिलाफ उसमें था कि औला और बेहतर कौन है? और उसकी वाज़ेह मिसाल क़िराअत के वजूद व रिवायात में कुर्रा का इख़्तिलाफ है।

इसी तरह सहाबा रज़ि0, ताबिईन और तबअ़े ताबिईन में कुछ लोग नमाज में बिस्मिल्लाह पढ़ते और कुछ नहीं पढ़ते थे, उन्हीं में बाज बिस्मिल्लाह जोर से पढ़ते और बाज आहिस्ता, कुछ लोग फज्र की नमाज़ में दुआए कुनूत पढ़ते और कुछ लोग नहीं पढ़ते, बाज हज़रात पछना लगाने, नक्सीर फूटने और कै के बाद वुजू करते और बाज इन चीज़ों के बाद वुजू नहीं करते थे, बाज मस्से जकर और औरत को शहवत के साथ छूने में वुजू के काइल थे और बाज काइल नहीं थे, बाज आग पर पकी चीज़ों के ख़ाने के बाद वुजू करते और बाज नहीं करते, बाज ऊँट का गोश्त खाने के बाद वुजू करते और बाज नहीं करते।

अइम–मए–फिक़्ह का तर्जे अमल–

इस तरह के अक्सर मसाइल में फुकहा ने यह इल्लत बयान की है कि उनमें सहा–बए–किराम का अमल मुख्तलिफ रहा है, इसमें कोई शुब्हा नहीं कि सारे सहा–बए–किराम हक पर थे, इसलिए हमेशा उलमा–ए–किराम इज्तिहादी मसाइल में मुफ्तियों के फतावा को जाइज करार देते और काजियों के फैसलों को तस्लीम करते रहे और बाज मरतबा अपने मस्लक के खिलाफ राय पर भी अमल किया है, अइम–मए–फिक़्ह को देखिये कि वह इन मसाइल में मसअले

की तह तक जाते हैं, इख़्तिलाफ को वाजेह करते हैं और फिर कहते हैं "यह जियादा एहतियात पर मबनी है, यही पसन्दीदा है, यह मेरे नजदीक जियादा बेहतर है" इसी तरह वह यह भी कहते हैं कि "मुझ तक बस यही रिवायत पहुंची है" इस तरह की ताबीरें मबसूत, इमाम मुहम्मद रह0 की तसानीफ और इमाम शाफई के कलाम में कसरत से मिलती हैं।

इन अइम–मए फ़िक़्ह के बाद उनके तलामिज़ा का दौर आया, उन्होंने अपने अइम्मा की आरा को मुख्तसर किया, उनके माबैन मौजूद इख्तिलाफात को मुदल्लल बयान किया और अपने अइम्मा के कौले मुख्तार पर जम गये, सलफ से जो यह बात मनकूल है कि उन्होंने अपने मजहब को इख्तियार करने की ताकीद की और यह कि उसकी राय को किसी भी हाल में न छोड़ा, यह या तो फित्री तकाजे की वजह से था, कि हर शख़्स को अपनी क़ौम और जमाअ़त की पसन्दीदा चीजें, यहाँ तक कि उनका लिबास व पोशाक और खाने की चीजें भी महबूब होती हैं, या इस वजह से था कि उनके सामने मज़बूत दलील थी या इसी तरह की कोई और बात होगी, इसी को बाज लोगों ने दीनी तअ़स्सुब समझ लिया, हालाँ कि उनके अन्दर दूर दूर तक यह बात (तअस्सुब की) नहीं थी।

इसलिए इख्तिलाफ के बावजूद आइम–मए–फ़िक़्ह और तमाम फ़ुकहा एक दूसरे के पीछे नमाजें पढ़ते थे मसलन इमाम अबू हनीफा और उनके तलामिजा, इसी तरह इमाम शाफई और दीगर हज़रात मदीना के मालकी इमामों के पीछे नमाज पढ़ते थे, अगरचि मदीना के मालकी फ़ुक़हा नमाज में बिस्मिल्लाह पढ़ने के काइल नहीं हैं जेहरी न सिर्री। हारून रशीद ने पछना लगाने के बाद नमाज़ पढ़ाई, उनके पीछे इमाम अबू यूसुफ ने नमाज़ पढ़ी और नमाज़ नहीं दुहराई, इमाम मालिक रह0 ने भी उनकी इक्तिदा की, इसलिए कि पछना के बाद वुजू के वह काइल नहीं थे जब कि इमाम अहमद बिन हंबल रह0 नक्सीर फूटने और पछना लगाने के बाद वुजू के काइल थे, उनसे पूछा गया कि अगर दौराने नमाज़ इमाम को खून निकल आए और वह वुजू न करे तो क्या उसके पीछे नमाज़ पढ़ी जाएगी? उन्होंने जवाब दिया कि मैं इमाम मालिक और सईद बिन मुसय्यिब रह0 के पीछे कैसे नमाज़ न पढ़ूँ?

इमाम शाफई ने फज्र की नमाज इमाम अबू हनीफा रह0 के मक्बरे के पास मस्जिद में अदा की और इमामे आजम रह0 के एहतराम में दुआए कुनूत नहीं पढ़ी, आपने यह भी फरमाया कभी कभी अहले इराक़ के मजहब यानी फुक्हाए हनफीया की तरफ रुजूअ़ कर लेता हूँ, इमाम मालिक रह0 ने मन्सूर रह0 और हारून रशीद रह0 से इसी तरह की बात कही थी।

फतावा बज़्ज़ाज़िया में इमाम अबू यूसुफ के बारे में मज्कूर है कि उन्होंने हम्माम से गुस्ल करके जुमे की नमाज़ पढ़ाई, लोगों ने आपकी इक्तिदा में नमाज़ अदा की और चले गये, फिर उनको

मालूम हुआ कि हम्माम के कुएँ में मरा हुआ चूहा मौजूद है, उस मौके पर इमाम अबू यूसुफ ने फरमाया " अब हम अपने भाई अहले मदीना की राय को इख्तियार कर लेंगे कि जब पानी दो कुल्लों (मटकों) को पहुंच जाय तो वह नापाक नहीं होता"।

इमाम खजन्दी रह0 से एक शाफई मस्लक वाले आदमी के बारे में पूछा गया, जिनकी एक या दो साल की नमाज़ छूट गई थी, फिर उसने इमाम अबू हनीफा के मस्लक को इख्तियार कर लिया था, कि ऐसे शख्स पर नमाज़ की कजा किस तरह वाजिब है, वह इमाम शाफई रह0 के मस्लक के मुताबिक नमाज की कजा अदा करे या इमाम अबू हनीफा के मस्लक के मुताबिक? उन्होंने जवाब दिया कि उन दोनों में से जिस मस्लक के मुताबिक भी कजा अदा करे जाइज है बशरते कि उस मस्लक के मुताबिक नमाज के जाइज होने का एतिकाद रखता हो। (हुज्जतुल्लाहुल बालिगाः 454–457)

इमाम इब्ने तैमिया रह0 ने भी अपनी किताब "अल–उल्फ़तुबैनल मुस्लिमीन" में इसी तरह की बात लिखी है, वह तहरीर करते हैं– "तमाम सलफ मशरुअ़ तरीके पर ही नमाज़ पढ़ते, दुआ और जिक्र व अज्कार करते थे, उनके शागिरदों ने उसी तरह उनके तरीके को इख्तियार किया, उसी तरह उन अइम्मा के अस्हाब व इलाके के मुसलमान अमल करते थे, कभी यह सारे तरीके बराबर होते और कभी उनमें से एक तरीका दूसरे से अफ़्जल भी होता, उनके बाद जो लोग आये उन्होने अपने इमामों के इख्तियार की हुई राय को इसलिए क़बूल किया कि इमाम ने अफ़्ज़लीयत की बिना पर उसे इख्तियार किया होगा, जब कि दूसरे लोगों ने उसके मुखालिफ राय को क़बूल किया, यहीं से हलाकत ख़ोज़ और गुमराह कुन नफ़्सानियत का हम्ला शुरुअ़ हुआ, हालांकि दोनों तरीके अल्लाह और उसके रसूल के नजदीक बराबर थे, हर जमाअत ने अपने तरीके को अफ़्जल समझा, जिन्होंने उस तरीके की मुवाफकत की उनको पसन्द किया और जिन्होंने उस राय से इख्तिलाफ किया, उनसे एराज किया, इस तरह उन लोगों ने ऐसे मसाइल को अफ़्ज़ल व ग़ैर अफ़्ज़ल दो हिस्सों में बाँट दिया जिसे अल्लाह ने बराबर दरजे में रखा था, और जिन मसाइल में अल्लाह ने सिर्फ अफ़्जलीयत का फर्क रखा था उनको इन हज़रात ने मसावी दरजा न दिया।

यह तफरका व इन्तिशार और इख्तिलाफ का एक मुहलिक दरवाजा था जो इस उम्मत में खुल गया, जब कि कुर्आन और हदीस ने इससे रोका था, सहीह हदीस के मुताबिक़ खुद नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस इख़्तिलाफ से रोका है, जैसे कि हमने "अस्सिराते मुस्तकीम" में जिक्र किया है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया "जैसा हमने सिखाया है उसी के मुताबिक पढ़ो"। (रिसालतुल उल्फति बैनल मुस्लिमीन, पेज 59)

इख़्तिलाफ के अस्बाब–

शैख इब्ने तैमिया रह0 अपनी किताब "इक्तिजाउस्सिरातिल मुस्तकीम" में हदीस नज़ाल को नक्ल करने के बाद तहरीर करते हैं।

उम्मत में अक्सर इख़्तिलाफात जो हवाए नफ़्स को जन्म देते हैं वह इसी किस्म के हैं, वह यह है कि इख़्तिलाफ करने वालों में से हर एक अपनी बात और उसके मुसतदल्लात को दुरुस्त ठहराता है और दूसरे की राय की नफी में ग़लती पर होता है जैसा कि तमाम कुर्रा हज़रात अपनी क़िराअत को दुरुस्त ठहराते हैं और दूसरे की क़िराअत की नफी में ग़लती पर हैं, इसलिए कि जिहालत आम तौर पर इसी नफी में होती है, जिसको इन्कार व तक्ज़ीब के नाम से जाना जाता है, इसबात में यह बात नहीं होती, इसलिए इन्सान जिस चीज़ को दलाइल से साबित करता है वह नफी के मुकाबले उसके लिए जियादा आसान होता है।

अस्ल में इख़्तिलाफ दो तरह का होता है इख़्तिलाफे तनव्वुअ़ और इख़्तिलाफे तज़ाद, इख़्तिलाफे तनव्वुअ़ के कई अस्बाब होते हैं।

❖ मसलन एक सूरत यह है कि दोनों अक्वाल या दोनों तरह का अमल मशरुअ़ हो, जैसा कि किराअत के सिलसिले में सहाबा का इख़्तिलाफ रहा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहा–बए–किराम रज़ि0 को मुतवज्जेह करते हुए फरमाया–

तुम दोनों अच्छा पढ़ने वाले हो–

❖ इसी तरह अज़ान के तरीक़े की मुख़्तलिफ़ सूरतें, इक़ामत, इमाम के पीछे सू–रए–फ़ातिहा पढ़ना, तशह्हुद, सलाते ख़ौफ़, ईद की तक्बीरें, और इनके अलावा दीगर मसाइल हैं। कि ये सब मशरुअ़ हैं। बस ये कहा जा सकता है कि इनमें बाज़ तरीक़े अफ़ज़ल हैं! और बाज़ ग़ैर अफ़ज़ल। मगर इन मसाइल में उम्मत के अक्सर अफ़राद के दरमियान शदीद इख़्तिलाफ पाया जाता है। इक़ामत को दो दो बार कहने या एक एक बार कहने और इन जैसे मअ़मूली मसाइल पर जंगों जिदाल की नौबत आ जाती है। जब कि ये ह़राम है। जो लोग इस अफसोस नाक सूरते हाल तक नहीं पहुँचते तो उमूमन उनके दिलों में इन जैसे मसाइल में दूसरे फ़रीक़ के ख़िलाफ नफ़सानियत, असबीयत और दूसरे से एराज़ पाया जाता है इस तरह जिस बात से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया, उसी का इरतिकाब करते हैं।

एक सूरत ये है कि दोनों अक़वाल का मतलब एक ही हो। सिर्फ तअ़बीर अलग हो, जैसे अल्फ़ाज़ की तायीन, दलाइल के सीग़े, मुसम्मियात की तअ़बीर अहकाम की तफ़हीम वग़ैरह में अकसर लोगों का इख़्तिलाफ़ रहा है। फिर जिहालत और ज़ुल्मो ज़ियादती, एक क़ौल की मदह और दूसरे क़ौल की मज़म्मत पर आमादह करती है।

❖ एक सूरत ये है कि दोनों के मआनें अलग अलग हों। लेकिन दोनों एक दूसरे के मनाफ़ी न हों। लिहाज़ा पहला क़ौल भी दुरुस्त होगा और

दूसरा भी, अगरचि पहले क़ौल का मआना दूसरे क़ौल से अलग हो। अकसर निज़ाई मसाइल में ऐसा ही हुआ है।

❖ एक सूरत ये है कि दोनों तरीक़े मशरुअ़ हों किसी फर्द या जमाअ़त ने एक तरीक़े को इख्तियार किया और दूसरे फर्द या जमाअ़त ने दूसरे तरीक़े को, दोनों का तरीक़ा दीन में पसन्दीदा है, लेकिन नादानी व ज़ियादती से नफ़्स एक को दूसरे की मजम्मत पर बग़ैर नेक नियती या बग़ैर इल्म के एक को दूसरे से अफ़ज़ल क़रार देने पर उक्साती है।

उसके बाद इमाम इब्ने तैमिया रह0 इख्तिलाफ़े तज़ाद की तफ़सील बयान करते हुए आगे लिखते हैं "ये तक़्सीम जिसको हमने इख्तिलाफ़े तनव्वुअ़ का नाम दिया है, इसमें दोनों फ़रीक में से हर एक बिला शुबह हक़ पर है, मगर जिसने दूसरे पर ज़ियादती की, वह क़ाबिले मज़म्मत है, इन जैसे मसाइल में कुरआन ने दोनों जमाअतों की तअ़रीफ की है, बशरते कि किसी एक की तारीफ़ से नफ़्सानियत या ज़ियादती का दख़ल न हो" अल्लाह तआ़ला का इरशाद है–

अनुवादः और दाऊद और सुलैमान के उस वाक़िए का भी ज़िक्र कीजिए, कि जब वह दोनों किसी खेती के झगड़े का (कि उस खेती में कुछ लोगों की बकरियाँ रात के वक़्त घुस गयीं थीं) फैसला करने लगे, और हम उस फैसले को जो लोगों के मुतअल्लिक़ हुआ था, देख रहे थे, और फिर हमने फैसले की आसान शक्ल सुलैमान को समझा दी, और हमने दोनों ही को फैसला करने की सलाहियत और इल्म अ़ता किया। (अम्बिया:77–78)

इसी तरह बनू क़ुरैज़ा से जंग के मौक़े पर जिन सहाबा रज़ि0 ने अस्र की नमाज़ अपने वक़्त पर अदा की और जिन्होंने बनू क़ुरैज़ा पहुँचने के बाद ताख़ीर से अदा की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों को सही क़रार दिया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ये इरशाद भी उसी मअ़ने में है, जब हाकिम इजतिहाद करे, और सही हुक्म तक पहुंच जाये, तो उसके लिए दो अज्र हैं और जो सही हुक्म तक न पहुंच सके, उसके लिए एक अज्र है, इस की बहुत सी नज़ीरें हैं। (इक़्तिज़ाउस्सिरातिल मुस्तक़ीम लिमुखालिफ़ति अस्हाबिल जहीम पेज 50–55)। हाफिज़ जलालुद्दीन सुयूती अपनी तस्नीफ़ (जज़ीलुल मवाहिब फी इख्तिलाफिल मज़ाहिब) में तहरीर करते हैं। मज़ाहिब में इख्तिलाफ इस मिल्लत के लिए बड़ी नेमत और बड़ी फज़ीलत की बात है। अहले इल्म इसके असरार से वाकिफ़ हैं मगर इल्म ना आशना लोगों से यहां तक कहते हुए सुना गया कि जब नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक शरीअ़त लेकर मबऊस हुए तो यह चार मसालिक कहां से वजूद में आए? इसी तरह यह भी हैरत अंगेज़ है कि बाज हज़रात एक मसलक को दूसरे से इस तरह अफ़ज़ल बताते हैं जिस से दूसरे मसलक की तनकीस और उसका कमतर होना साबित होता है।

उसकी वजह से कभी

नावाक़िफ़ों के दरमियान लड़ाई झगड़े की नौबत तक आ जाती है। और यह मसालिक जाहिली असबीयत की शक्ल इख्तियार कर लेते हैं। हालांकि उलमा को तो इन चीज़ों से पाक होना चाहिए। खुद सहा–बए–किराम रज़ि0 के दरमियान बाज फुरूई मसाइल में इख्तिलाफ रहा है। जबकि वह खैरे उम्मत थे। मगर उनमे से किसी ने दूसरे से मुखासमत नहीं की। न एक ने दूसरे से अदावत की। और ना ही एक दूसरे को खताकार और गलत ठहराया। उसमें मसलिहत यही है कि मिल्लत के मुख्तलिफ मसालिक में इख्तिलाफ इस उम्मत की इम्तियाज़ी खुसूसियत हैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले जो अम्बिया मबऊस हुए वह एक शरीयत और मुतअय्यन अहकाम लेकर आए, इसलिए उनके मानने वालों के लिए शरीअत में तंगी हुई कि उन में अकसर फुरूई मसाइल में तख्यीर की गुंजाइश नहीं थी जो तख्यीर हमारी शरीअत में है, जैसे यहूद में किसास का, नसारा में दियत का हतमी तौर पर लाजिम होना वगैरह, यह शरीअत बहुत ही आसान है। उसमें किसी तरह की तंगी नहीं है, जैसा कि खुद अल्लाह तआला का इरशाद है।

अनुवादः "अल्लाह तआला तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, और वह तुम्हारे लिए मुश्किल या तंगी नहीं चाहता"।

(अलबक़रहः 185)

इसी तरह फरमाया, अनुवादः "और अल्लाह ने तुम्हारे लिए दीन में तंगी नहीं फरमाई" (हज–78) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न फरमाया मैं भेजा गया आसानी वाली उम्मत के साथ, इस्लामी शरीअत की वुसअत यह है कि इस शरीअत के उलमा के दरमियान फुरूई मसाइल में इख्तिलाफ़ रहा है, यह मसालिक अपने इख्तिलाफ़ात की वजह से गोया मुतअद्दिद शरीअतों की तरह हैं, उन सब के अहकाम इस वाहिद शरीअत में हैं इस तरह यह शरीअत बयक वक़्त मुतअद्दिद शरीअतों का मज़मूआ है, जिसे लेकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मब्ऊस हुए इसी लिए इस शरीअत में इस उम्मत के लिए बड़ी गुंजाइश है, यह नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़ैर मामूली क़द्र व मंज़िलत और दीगर अंम्बिया पर आप की फ़ज़ीलत की दलील है कि हर एक को एक मुतअय्यन हुक्म दे कर भेजा गया, और आप को एक मामले में मुतअद्दिद अहकाम मिले। यह लतीफ इशारा है जिसे अल्लाह तआला ने मुझ पर वा किया, जिसे असरारे शरीअत का इल्म और ज़ौक़ हो वही इसकी क़द्र कर सकता है। इस इबारत को शैख़ अब्दुल फ़त्ताह अबू गुद्दह ने इमाम इब्ने तैमिया रह0 की किताब "अल उलफ़तु बैनल मुस्लिमीन" पे0 76–78 के हाशिये में नक़्ल किया है।

अहले क़िब्ला की तक्फ़ीर दुरूस्त नहीं है–

लिहाज़ा किसी ग़लती या किसी गुनाह के इरतिकाब पर किसी मुसलमान को काफ़िर क़रार देना दुरुस्त नहीं, ये अहले क़िब्ला के माबैन मुतनाज़िअ फ़ी मसाइल

की तरह है, अल्लाह तआला का इरशाद है—

अनुवादः "पैग़म्बर ईमान लाए उस पर जो उस पर उसके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल हुआ है और मोमिनीन भी यह सब ईमान रखते हैं अल्लाह पर, और उसके फरिश्तों पर, और उसकी किताबों पर और उसके पैग़म्बरों पर, हम उसके पैग़म्बरों में बाहम कोई फर्क नहीं करते और कहते हैं कि हमने सुन लिया और हमने इताअत की "ऐ हमारे परवरदिगार! हम तुझ ही से बखशिश चाहते हैं, और तेरी ही तरफ वापसी है"।

(अलबकरहः285)।

और सही मुस्लिम की रिवायत से साबित है कि अल्लाह तआला ने ये दुआ कुबूल फरमायी और मोमिनीन की ख़ता को मुआफ़ कर दिया, यहां तक कि उन ख़वारिज से जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़िताल का हुक्म दिया, चौथे ख़लीफ़—ए—राशिद हज़रत अली रज़ि0 ने उन लोगों से जंग की और सहाबा व ताबिईन और तबअ़े ताबिईन रह0 ख़वारिज से जंग करने पर मुत्तफ़िक़ थे, उनको भी हज़रत अली, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास और दीगर सहा—बए—किराम रज़ि0 ने काफ़िर नहीं क़रार दिया बल्कि जंग के बावजूद मुसलमान समझा, मगर जब उनके हाथ मुसलमानों के पाक व साफ खून से रंग गये, उनके माल व असबाब को लूटा गया तो फिर हज़रत अली रज़ि0 ने उनसे जंग की, लिहाज़ा उनसे जंग करना उनके ज़ुल्म व सरकशी को रोकने के लिए था, न कि उनके कुफ़्र की वजह से, इसी वजह से उनकी औरतों को बांदी नहीं बनाया और न उनके अमवाल को माले ग़नीमत समझा।

जबकि उनकी गुमारही नस्स से साबित थी, और सहाबा का इस पर इजमाअ़ था, इसके बाद भी उनको काफ़िर नहीं समझा गया, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर उनसे जंग की गई, तो फिर फुरूई मसाइल में इख़्तिलाफ़ करने वाली जमाअ़तों के बारे में कैसे कुछ कहा जा सकता है, जबकि उनमें उनके माबैन सिर्फ यह शुब्हा है कि उनसे जियादा जानने वाला उनमें कौन है? इसलिए हरगिज़ किसी जमाअ़त के लिए जाइज़ नहीं कि वह दूसरे की तक़्फ़ीर करे और उनके खून और माल को हलाल समझे ख्वाह उनमें सरीह बिद्अ़त ही क्यों न हों, और जब तकफ़ीर करने वाले खुद भी बिद्आत से खाली न हों तो उनकी बिदअत जियादा क़बीह है, बल्कि सच बात यह है कि यह लोग जिन मसाइल में इख़्तिलाफ़ करते हैं उनकी हक़ीकत से ना आशना हैं। (रिसालतुल उल्फ़तुल बैनल मुस्लिमीन पे0 86)।

मिल्ली उख़ूवत और इस्लामी उख़ूवत—

उलमाए सलफ़ के जो हालात हमारे सामने हैं, वह हमें बताते हैं कि फ़रूई मसाइल में इख़्तिलाफ़े राये के बावजूद हमारे दर्मियान महब्बत, हमदर्दी और भाई चारा के जज़्बात होने चाहिए, वह लोग इस अन्दाज़ से रहते थे कि उनके दर्मियान

उखूवतो महब्बत ब दर्जह–ए–अतम मौजूद थी, हालांकि वह जिसे सही और हक़ समझते उस पर पूरी मज़बूती से क़ायम रहते थे, और ऐसे मसाइल में सिर्फ़ इल्मी बहस करते थे।

इसी तरह जब हम अइम्म–ए–मुज्तहीदीन के हालात पर ग़ौर करते हैं मसलन इमाम शाफ़ई रह0 इमाम हंबल और उनके अलावा दीगर अइम्मा तो हमें साफ नज़र आता है कि वह बाहम बड़ी महब्बत और रवादारी का मआमला करते थे यह तरजे अख्लाक़ हमारे दरमियान बाक़ी रहना चाहिए, वरना हर मसलक वाले अपने मसलक को हक़ पर और दूसरे मसलक को गुमराही पर समझने लगेगें, फिर हमारा दीन एक छोटे मसलक या महदूद दायरे में सिमट कर रह जायेगा, यह एक छोटी जमाअ़त का दीन हो जायेगा न कि आ़लमी और हमेशा रहने वाला दीन, लिहाज़ा एक अ़ज़ीम उम्मत के लिए, जिस पर खत्मे नुबूव्वत की मुहर सबत हो, और जो अल्लाह की शरीअ़त को क़यामत तक जारी व नाफिज़ रखने के लिए आयी हो, इसके लिए यह सूरते हाल किसी भी तरह मुनासिब नहीं है।

और न ही यह मुनासिब है कि चन्द फ़ुरूई मसाइल और इस्तिहबाबी उमूर में इख्तिलाफ़े राय को अदावत, बुग़ज व कीना का ज़रीआ़ बनाया जाये जबकि पूरी उम्मत दीन के बुन्यादी उमूर में मुत्तफ़िक़ है, सलफ़ के तमाम मुहक़्क़िक़ीन इस हक़ीक़त का एतराफ कर चुके हैं और सभों ने इसे तस्लीम भी किया है।

कठिन शब्दों के अर्थ–

मसाइल= यह मसअला का बहु वचन है मसअला का अर्थ है प्रश्न अथवा समस्या।

इमाम= नायक, पथप्रदर्शक निपुण योग्य।

मअ़रिकतुल आरा= शानदार, भव्य। फ़क़ीह= इस्लामिक विधान जानने वाला।

फुक़हा= फ़क़ीह का बहुवचन।

तक्बीराते तशरीक़= 9 जिलहिज्ज की फज्र की नमाज से 13 जिलहिज्ज की अस्र की नमाज के बाद कही जने वाली तक्बीरें।

एहराम= हज या उमरे की नियत करके लब्बैक पढ़ना मगर मर्दों के लिए सिले कपड़े उतार कर दो चादरें पहनना भी जरूरी है।

इकामत = नमाज़ की जमाअत से पहले अजान के अलफ़ाज़ दोहराना।

औला= सबसे अच्छा, बेहतर।

एराज़= मुँह फेर लेना।

मुसतदल्लात= दलीलें, तर्क नफी= नकारना। इस्बात= सकारना, सकारात्मक।

तअ़बीर= अर्थ, व्याख्या।

तखयीर= चयन।

क़िसास= जैसे का तैसा बदला।

दियत= कत्ल के खून का बदला माल से। तशह्हुद= अत्तहीयात की पूरी अरबी इबारत जो दो रकअत नमाज़ के अन्त में बैठ कर पढ़ते हैं।

आइम्मा= इमाम का बहुवचन।

आइम–मए–फ़िक़्ह= फ़िक़्ह के निपुण विद्वान, इस्लामिक विधान के पथ प्रदर्शक।

❖❖❖

अदब ही से इन्सान, इन्सान है
अदब जो न सीखे, वह हैवान है।
बिठाते नहीं बे अदब को क़रीब,
यह सच बात है, बेअब बे नसीब॥

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः क्या अ़क़ीक़ा करना जरूरी है? अगर कोई शख्स अपने बच्चे का अ़क़ीक़ा न करे तो क्या वह गुनहगार होगा?

उत्तरः हनफी आलिमों की तहकीक़ (अनुसन्धान) में अ़क़ीक़ा कोई अनिवार्य अथवा आवश्यक कार्य नहीं है, अपितु मुस्तहब (ऐसा कार्य जिसके करने पर सवाब मिलेगा और न करने पर कोई गुनाह न होगा) है अतः अगर कोई अपने बच्चे का अ़क़ीक़ा कर दे तो अच्छी बात है, सवाब पाएगा और न कर सके तो कोई गुनाह नहीं होगा।

(रद्दुलमुहतार 336/6)

प्रश्नः एक शख्स ने अपने बच्चे का अ़क़ीक़ा नहीं किया, बच्चा जवान हो गया है, क्या इस उम्र में अ़क़ीक़ा किया जा सकता है?

उत्तरः बचपन में अ़क़ीक़ा इसलिए किया जाता है कि बच्चा बलाओं और आफ़तों से महफूज़ रहे, अब जब कि बच्चा जवान हो गया है और दिल अ़क़ीक़ा करना चाहता हो तो कर सकते हैं उसमें कोई हरज नहीं है बल्कि सवाब मिलेगा।

(रद्दुलमुहतार 336/6)

प्रश्नः अ़क़ीक़ा पैदाइश (जन्म के कितने दिन बाद किया जाएगा? क्या कच्चा गोश्त तक्सीम करना चाहिए या पका कर खिलाना चाहिए?

उत्तरः अ़क़ीक़ा पैदाइश के सातवें दिंन करना चाहिए, अगर सातवें दिन न कर सके तो चौदहवें दिन, वरना इक्कीस्वें दिन, जब भी करना हो पैदाइश के दिन से एक दिन पहले के दिन की रिआयत करना बेहतर है, जैसे बच्चा जुमे को पैदा हुआ था तो बाद में जब भी अक़ीक़ा करें जुमेरात को करें यह बेहतर है जरूरी नहीं। (माला बुद्द मिन्होः 174) कच्चा गोश्त तक्सीम करना भी दुरुस्त है, और पका कर खिलाना भी जाइज है।

(रद्दुलमुहतारः 213/5)

प्रश्नः अ़क़ीक़ा की दावत में किन लोगों को शामिल करना चाहिए, क्या मालदार रिश्तेदार शामिल हो सकते हैं?

उत्तरः अ़क़ीक़ा की दावत में मालदार और ग़रीब, दोस्त अहबाब और रिश्तेदार सब शामिल हो सकते हैं।

(तन्कीहुल फतावा अलहामिदीयाः 246/2)

प्रश्नः क्या बच्चे के सर के बाल सातवें दिन ही उतरवाना ज़रूरी हैं, या जब अ़क़ीक़ा किया जाये तब उतरवाये जाएं? अ़क़ीक़े के बालों के बराबर चाँदी खैरात करना कैसा है? यह अमल अ़क़ीक़े के दिन उतरवाए गये बालों के बराबर चाँदी खैरात करने का होना चाहिए या अक़ीक़ा के दिन से पहले या बाद में भी हो सकता है?

उत्तरः सातवें दिन अ़क़ीक़ा करना और बाल उतरवाना मुस्तहब है, अगर उस दिन मौका न हो तो चौदहवें दिन फिर इक्कीसवें दिन। (तिर्मिजीः 278/1) उसी

वक्त बालों के बराबर चाँदी खैरात करना मुस्तहब है बाद में इसका जिक्र नहीं मिलता। अगर अ़क़ीक़े में देर हो जाये तो बालों को छोड़े रखना ठीक नहीं अ़क़ीक़े के वक्त बालों का मूंड़ना मुबाह (ऐसा काम जिसके करने पर न सवाब हो न छोड़ने पर गुनाह हो) है, यह न सुन्नत है न वाजिब।

(फतावा हिन्दीयाः 362/5)

प्रश्नः अ़क़ीक़े के बाद बच्चे के बाल मुन्डा करके दफ़्न कर देना चाहिए या फेंक देना चाहिए?

उत्तरः बेहतर यही है कि बाल दफ़्न कर दें।

(फतावा हिन्दीयाः358/5)

प्रश्नः क्या लोगों का यह ख्याल सही है कि अ़क़ीक़े के गोश्त की हड्डियों को नहीं तोड़ना चाहिए?

उत्तरः आम लोग अ़क़ीक़े के गोश्त की हड्डियों के तोड़ने को नाजाइज समझते हैं, यह अ़क़ीदा और ख्याल ग़लत है, कुछ किताबों में जो यह लिखा है कि नेक फाल (शगुन) के तौर पर हड्डियों को नहीं तोड़ना चाहिए यह सिर्फ लिखने वाले का इज्तिहाद है जिस पर कोई मरफूअ़ हदीस नहीं है।

(मजमूअ़तुल फतावाः 288/2)

प्रश्नः अ़क़ीक़ा बच्चे के बाप दादा को करना चाहिए या नाना और नानिहाल के लोगों को?

उत्तरः सामर्थ्य होने पर बाप, दादा आदि के लिए अ़क़ीक़ा करना अहनाफ के नजदीक मुस्तहब है, नाना, मामा, भी कर सकते हैं, अगर बच्चा ददिहाल में पैदा हो तो ददिहाल वालों पर अ़क़ीक़ा करना मुस्तहब है और अगर बच्चा नानिहाल में पैदा हो तो नानिहाल वालों पर अक़ीक़ा करना मुस्तहब है। ताकि बाल उतरवाना और ज़ब्ह करना एक साथ आसान हो सके।

प्रश्नः अगर कोई शख्स बच्चे के अ़क़ीक़ा में सिर्फ एक ही बकरा ज़ब्ह करे तो अ़क़ीक़ा हो जायेगा या नहीं? या दो बकरे ही ज़ब्ह करना ज़रूरी है?

उत्तरः बेहतर यही है कि लड़के की तरफ से दो बकरे (या दो बकरियां) या बड़े जानवर की कुर्बानी में दो हिस्से करें लेकिन अगर गुन्जाइश न हो तो एक बकरा या बकरी या बड़े जानवर की कुर्बानी में एक हिस्सा भी लेना काफी है। तिर्मिजी शरीफ की एक रिवायत में लड़के की तरफ से एक बकरा ज़ब्ह करने का ज़िक्र भी मौजूद है।

(तिर्मिज़ीः278/1)

प्रश्नः अ़क़ीक़े का गोश्त माँ और बाप, नाना, नानी खा सकते हैं या नहीं?

उत्तरः अ़क़ीक़े के गोश्त खाने में माँ बाप नाना, नानी सब शरीक हो सकते हैं।

(माला बुद्दमिन्होः173)

प्रश्नः कुर्बानी के जानवर में अ़क़ीक़े का हिस्सा लेना कैसा है? अगर कुर्बानी के जानवर में पाँच हिस्से कुर्बानी के हों और दो हिस्से अ़क़ीक़े के हों तो कुर्बानी और अ़क़ीक़ा दोनों अदा हो जायेंगे या नहीं?

उत्तरः कुर्बानी के जानवर में अ़क़ीक़ा करना दुरुस्त है।

(तहतावीः266)

प्रश्नः क्या किसी ग़ैर मुस्लिम का पैसा मस्जिद के निर्माण या मस्जिद के दूसरे कामों में लग सकता है?

उत्तरः अगर गैर मुस्लिम खुश दिली से किसी किस्म के

दबाव के बिना बल्कि अखलाक़ी (नैतिक) दबाव के बिना अपना पैसा मस्जिद की तामीर के लिए दे और उनके अकीदा व खयाल में यह नेक काम हो और हमसे अपनी इबादत गाहों (पूजा स्थलों) में तआवुन (सहयोग) के तलबगार होने का अन्देशा न हो तो उनका पैसा मस्जिद की तामीर या मस्जिद के दूसरे कामों में लगाया जा सकता है।

(फतावा हिन्दीया जि0 2 पे0 358)

प्रश्नः कुर्आन मजीद में आया है, अनुवादः "अल्लाह तो बस यही चाहता है ऐ (नबी के) घर वालों (अहले बैत) तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम को खूब पाक साफ़ कर दे"। (अल अहजाबः 32) यहाँ अहले बैत में कौन कौन शामिल हैं? अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाज मुतहहरात (पवित्र पत्नियां) अहले बैत में शामिल हैं या नहीं?

उत्तरः सू–रए–अहजाब की लिखी हुई आयत में "अहले बैत" के अन्दर अज़वाज (पत्नियां) भी शामिल हैं क्योंकि आयत के नुजूल का सबब यही हैं, तफ़सीर इब्ने कसीर में उसकी सराहत मौजूद है, अनुवादः "यह आयत नस्स (तर्क) है इस बात पर कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाज अहले बैत में शामिल हैं इसलिए कि इस आयत के नाजिल होने का सबब यही हैं" इब्ने जरीर हज़रत इकरमा से रिवायत करते हैं कि वह बाज़ार में उक्त आयत पढ़ कर एलान करते थे कि यह आयत ख़ासतौर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाज के हक़ में उतरी है। (तफ़सीर इब्ने कसीर जि0 3 पे0 232)

प्रश्नः हम दुरूद शरीफ़ में पढ़ते हैं "अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव अ़ला आलि मुहम्मद" यहां आल में कौन कौन लोग शामिल हैं? हम समझते हैं कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ब दर–जए–औला आल में शामिल हैं।

उत्तरः दुरूद में जो आल का लफ़्ज़ है उसमें हाशिम की औलाद, अब्दुल मुत्तलिब की औलाद, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 और उन की औलाद अज़वाजे मुतहहरात और उनकी औलाद जो मोमिन और मुत्तक़ी हैं आल में हैं। सुनने अबी दाऊद की शरह औनुल माबूद में नैलुल औतार और मिरक़ात के हवाले से बड़ी तफ़सीलात मौजूद हैं, इब्ने हजर मक्की ने कहा कि शाफ़ई और जमहूर उलमा के नज़दीक हाशिम और अब्दुल मुत्तलिब की मोमिन औलाद आल में हैं और एक रिवायत यह भी है कि आल से मुराद हज़रत फ़ातिमा की औलाद और उनकी नस्ल है और यह भी रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाज और आप की ज़ुर्रीयात (औलाद) आल में हैं इसलिए कि रिवायत में उनका भी ज़िक्र है।

❖❖❖

अनुरोध

पाठक सच्चा राही के नये खरीदार बना कर इस सवाब के कार्य में सहयोग दें और सवाब कमायें,

शुक्रिया

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जीवन चरित्र और हमारा जीवन

—हजरत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अल्लाह तआला जो ख़ुदाए वाहिद (एक) है और सबको उसी ने पैदा किया, और इन्सानों को ख़ास तौर पर बेहतरीन सलाहियतों वाला (योग्यता वाला) बनाया और उसको बताया कि वह इन सलाहियतों से अच्छे काम ले और ज़िन्दगी को अच्छी सिफ़ात वाली बनाए।

यह बताने और ज़िन्दगी की सही राह (सत्य मार्ग) दिखाने के लिए वह इन्सानों में ही से कुछ लोगों को "नबी" की हैसियत से भेजता रहा, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अच्छी सिफ़ात का सबसे बेहतरीन नमूना बना कर भेजा ताकि लोग उनकी नसीहत को सुनने के साथ उनकी अच्छी सिफ़ात को देखें और अच्छा असर लें, उनके मानने वाले और उनकी नसीहत पर अमल करने वाले मुसलमान कहलाए, शुरु में नबी की बात न मानने वालों ने उन मानने वालों की बड़ी मुख़ालिफत (विरोध) की और उनको सताया यहां तक कि उनको अपने घरों में रहना दुशवार हो गया। उनको जब मक्के में रहना दुशवार हो गया तो उनमें से कुछ लोग अपनी जान बचाने के लिए क़रीब के मुल्क हबशा चले गए ताकि वहां पनाह (शरण) लें, वहां जाकर कुरैश के लोगों ने ग़लत फ़हमी (भ्रान्ति) फैलाई तो हुकूमत ने मुसलमानों को बुलाया और कहा कि सुना जा रहा है कि तुम ख़राब लोग हो और अपने मुल्क से भागकर आए हो? इस पर हज़रत जाफ़रे तय्यार ने बहुत प्रभावशाली भाषण दिया और बताया कि यह रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिनकी बातों को हमने माना है, वह इन्सानियत के मुहसिन (उपकारी) हैं, और उन्होंने क़ौम के अन्दर से बुरी बातें दूर कराई, हमको नसीहत करके शरीफ़ इन्सान बनाया, आपस में महब्बत वाला, हमदर्दी वाला इन्सान बनाया, हम बुरी बातों में पड़े हुए थे, अपने बनाये हुए पत्थर के बुतों को पूजते थे, अच्छी इनसानी बातों और शरीफ़ाना अख़लाक़ से दूर हो गए थे, हम को उन्होंने मानवता की ओर ध्यान दिलाया, आपस की हमदर्दी सिखाई, अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों को मअ़बूद (पूज्य) बनाने से रोका, एक अल्लाह की इबादत की दअ़वत दी, इसको देख कर हमारी क़ौम बजाये पसन्द करने के हमारी मुख़ालिफ़ (विरोधी) हो गयी, हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 का वह भाषण बड़े आदर्श का वाहक है। हम लोग जिन हालात में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और जिस जगह रह रहे हैं, हमको समझना चाहिए कि इस देश में हम अल्पसंख्यक हैं, अगर हमने इनसानियत की ख़ूबियों को इख़्तियार किया और उनसे नावाक़िफ़ (अपरिचित) लोगों को परिचित कराने के लिए वह तरीक़ा अपनाया जो हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 ने

अपनाया था (यानी अपने मुखालिफीन के सामने इस्लाम को इस तरह पेश करें कि वह इस्लाम को बहुत अच्छा मजहब समझने लगें) और जो ग़लत फ़हमियां (भ्रान्तियां) मुसलमानों के तअल्लुक़ से फैला दी गई हैं, हमने उनको दूर कराने का काम किया तो लोगों की बदगुमानियां (दुर्भावना) दूर होंगी और यहां हम को काम करने का अच्छा मौक़ा मिलेगा, हज़रत जअ़फ़र की तक़रीर से हम को सबक लेना चाहिए और कोशिश करना चाहिए कि हमारा किरदार (आचरण) ऐसा हो कि दूसरे हम से महब्बत करने लगें।

यहां अरब व्यापार करने आए लेकिन उन्होंने अच्छा इस्लामी किरदार पेश किया, सच्चाई, अमानतदारी का, अख़लाक़ व महब्बत का, इन्सानियत दोस्ती का, इसलिए उनसे यहां के लोग महब्बत करने लगे, तिजारत व कारोबार के लिए आए, लेकिन अपनी रवादारी (उदारता) अख़लाक़ से लोगों का दिल जीत लिया, ऐसा कि उनका दीन और तरीक़ा भी लोकप्रिय होने लगा।

हमें रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन चरित्र का अध्ययन करना चाहिए कि उनमें कैसी मानव सहानुभूति थी? आचरण की कैसी विशेष्टता थी? एक जनाज़े का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़र हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गये, कहा गया कि यह यहूदी का जनाज़ा है, फ़रमाया "क्या यहूदी इन्सान नहीं हैं? एक यहूदी से आपने कुछ खजूरें ग़रीबों को देने के लिए क़र्ज़ लीं, क़र्ज़ की मुद्दत पूरी होने से पहले ही उसने अपना क़र्ज़ वापस मांगा, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सख़्ती और गुस्ताख़ी (अशिष्टता) से पेश आया, बहुत बुरा भला कहा इतना कि सुनने वालों के लिए बरदाश्त करना मुश्किल हो गया, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बरदाश्त किया यह तक न कहा कि भाई अभी तो कई दिन बाक़ी हैं? सहा–बए–किराम से कहा इनको खजूरें दे दो और कुछ बढ़ा कर देना, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस असाधारण सहनशीलता को देख कर वह यहूदी मुसलमान हो गया, आज सूरते हाल यह है कि मुसलमान की जीवन पद्धति मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन चरित्र से बिलकुल विरुद्ध हो गया है और मुसलमानों के तर्ज़े अमल (कार्यप्रणाली) की वजह से इस्लाम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित बड़ी गलत फ़हमियां (भ्रांतियां) फैल रही हैं, यह समझा जा रहा है कि मुसलमानों में इन्सानियत नहीं होती, इन हालात में हमें महब्बत अख़लाक़ और रवादारी (उदारता) का तरीक़ा पेश करना चाहिए और अपने किरदार (आचरण) से ख़ैरे उम्मत (सर्वोत्तम समुदाय) का किरदार पेश करना चाहिए।

हुकूमतें आती जाती हैं उनके आने जाने से फ़र्क़ नहीं पड़ता, हमारे मुआमलात व अख़लाक़ दुरुस्त होने चाहिए, और हम अपने तर्ज़े अमल, व्यवहार से यह साबित करें कि हम मुल्क (देश) के लिए मुफ़ीद (लाभदायक) और देश वालों के लिए सहानुभूति रखते हैं, हम वही मांग करते हैं जिसका संविधान ने हमें अधिकार दिया

है हमारे साथ न्याय किया जाये और हमारी तरक़्क़ी के लिए रुकावटें न पैदा की जायें, देश की बीस करोण आबादी का हिस्सा अगर बेकार और बेफ़ाएदा होगा तो बोझ देश ही पर पड़ेगा ज़िन्दगी दो तरह की होती है "व्यक्तिगत और सोशल (जाती और समाजी) ज़िन्दगी के यह दोनों रुख़ (दिशाएं) दुरुस्त होने चाहिए, अक़ीदा सही हो, नमाज़ें दुरुस्त हों और वक़्त पर अदा की जायें, नमाज़ अल्लाह तआला के सामने खुशू व खुज़ू (ध्यान पूर्वक) के साथ हो ताकि इबादत ज़ाहिरी तौर पर भी इबादत कही जाये नमाज़ स्वयं मसावात (समानता) का नमूना पेश करती है। इन्सानियत दोस्ती का उत्तम नमूना है, बहुत से लोग इसी को देख कर इस्लाम से प्रभावित होते हैं।

मुसलमान जब हिजरत करके मदीना पहुंचे और क़ुबा में ठहरे तो उनकी इमामत नव अवस्था ग़ुलाम सालिम रज़ि0 किया करते थे और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 जैसे सहाबी उनके पीछे नमाज़ पढ़ते थे, यह सालिम वह थे जिनको औस व ख़ज़रज के लोगों ने उनकी ख़स्ता हाली देख कर ख़रीदने से इनकार कर दिया था, वह जब उनको लोगों की इमामत करते देखते तो उनको तअज्जुब होता, वह ग़ौर करते, सोचते और फिर इस मसावात (समानता) को देख कर इस्लाम से क़रीब होते, तारीख़ ऐसे वाक़िआत (घटनाओं) से भरी पड़ी है।

ऐसे ही ज़कात का निज़ाम (व्यवस्था) है, कि माल की ज़कात निकाली जाये और ज़रूरत मन्दों को पहुंचाई जाये, ग़रीबों का पेट भरा जाये तो इन्सानी हमदर्दी की कैसी अच्छी मिसाल सामने आएगी और दूसरों पर इसका कैसा असर पड़ेगा? इन्सानी दोस्ती का जज़्बा पैदा होगा हज़रत उमर रज़ि0 का वाकिया मशहूर है कि एक मरतबा वह गश्त करते हुए एक ग़रीब औरत के पास से गुज़रे बच्चे भूख से रो रहे थे, ग़ुरबत की मारी माँ ख़ाली हांडी चूल्हे पर चढ़ाए थी कि शायद बच्चे बहल कर सो जायें, हज़रत उमर रज़ि0 को सूरते हाल मालूम होने पर बैतुलमाल (राजकोष) से खाने पीने का सामान लेकर पहुंच गये, और उस औरत के हवाले किया, साथी चलने को कहते हैं तो फ़रमाया कि इन बच्चों को खाना खिलाने के बाद हंसता हुआ देख कर चलेंगे। आप सोचें कि अगर हम अपना माहौल और समाज बना लें तो हमसे कौन नफ़रत करेगा?

आज हमारी शक्ल व सूरत को, और इस्लामी शिक्षा को बिगाड़ कर पेश किया जा रहा है बद गुमानी (दुर्भावना) पैदा की जा रही है। अगर हम अपने को सीरते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जीवन चरित्र के सांचे में ढालेंगे, और जो आदर्श नमूना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेश किया था उसकी चलती फिरती तसवीर हम लोग बनेंगे तो लोग ख़ुदबख़ुद इस्लाम से क़रीब होंगे और मुसलमानों के लिए महब्बत पैदा होगी जैसा कि अरब ताजिरों (व्यापारियों) के अख़लाक़ (आचरण) चाल चलन से प्रभावित हो कर बेशुमार लोग मुसलमान हो गये। ❑❑

दीवाली का उल्लू

—शमीम इक़बाल ख़ाँ

कुदरत की बेशुमार कृतियों में एक कृति उल्लू की भी है जो अपनी सज–धज और अपनी देवमालाई धार्मिक अहमियत के साथ–साथ अपनी मनहूसियत के लिए बहुत मशहूर है, इसी लिए किसी व्यक्ति की त्रुटि पर उसे उल्लू की उपाधि प्रदान कर दी जाती है, उत्तर प्रदेश अपराध शाखा, अपराध अनुसंधान विभाग लखनऊ में एक पुलिस उपाधीक्षक श्री श्रीराम शर्मा हुआ करते थे जो बड़े सज्जन, ईमानदार और अधीनस्थ कर्मियों के लिए बड़े हमदर्द थे। (कभी–कभी पुलिस में इस तरह के अधिकारी भी मिल जाते हैं) क्रोध तो वह जानते ही नहीं थे, जब किसी अधीनस्थ पर बहुत नाराज़ होते तो उस वक्त इस अन्दाज़ से प्यारी गाली देते थे "यार! तुम तो मुझ से भी ज्यादा उल्लू हो" और लोग मंद मुस्कान के साथ स्वीकार कर लिया करते थे।

यह विचार करने योग्य बात है कि किसी को कम अक़्ल या बेवकूफ़ कहने के लिए इस पक्षी का नाम क्यों लिया जाता है? यद्यपि मानवी मनोविज्ञान में यह बात कही जाती है कि बड़ी आँखों वाला और बड़े सर वाला मनुष्य बुद्धिमान होता है। हालांकि उल्लू की आँखें भी बड़ी होती हैं और सर भी बड़ा होता है फिर भी बेवकूफ़ लोगों की मिसाल प्रायः उल्लू से ही दी जाती है। साधारणतयः जनसाधारण उल्लू को अपशगुन पक्षी मानते हैं परन्तु अंग्रेजी साहित्य की बच्चों की कहानियों (जैसे हेरी पोटर आदि) में उल्लू को बहुविशेषताओं वाला बुद्धिमान पक्षी माना गया है।

हिन्दू धर्म में उल्लू को लक्ष्मी देवी की सवारी माना जाता है और कहा जाता है कि वह उसी पर बैठ कर अपने भक्तों के यहाँ जाती हैं। इसी सिलसिले का एक लतीफ़ा पढ़ने को मिला, आप भी आनन्द लें:–

एक बार लक्ष्मी जी की सवारी का उल्लू उनसे नाराज हो गया और बोला "आप की पूजा तो सभी करते हैं, मुझे कोई नहीं पूछता, उपयुक्त होगा कि आप सवारी का दूसरा प्रबन्ध कर लें और मुझे क्षमा करें", लक्ष्मी जी भी उस समय मनो–विनोद के मूड में थीं, कहने लगीं अब हर साल मेरी पूजा से आठ–दस दिन पहले तुम्हारी पूजा हुआ करेगी, उस दिन केवल उल्लू ही पूजे जायेंगे और उस त्योहार का नाम होगा 'करवा चौथ' उल्लू को तसल्ली हो गई या यूँ कहा जाये बेचारा उल्लू बन गया।

यूँ तो संसार में उल्लू की 205 प्रकार की प्रजातियां पाई जाती हैं लेकिन इनकी पूरी नस्ल को मात्र दो क़बीलों में बाँटा गया है।

1. बार्न उल्लू (Barn owls):-

इसका वैज्ञानिक नाम स्ट्रिगिफ़ार्मस् (Strigiformes) है यह औसत शरीर वाला हल्के सुरमई रंग का पक्षी होता है, बदन का ऊपरी भाग लाली लिये हुए और इसके पंख व पर सफ़ेद रंग के होते हैं, इसके परों और सरों

पर भूरे रंग के धब्बे होते हैं, चेहरे की बनावट गोलाई लिये हुए 'दिल' के आकार की होती है और भूरे रंग के बार्डर से घिरी होती है, बार्डर से घिरा हुआ हिस्सा सफ़ेद होता है, इसके पैरों की रंगत पीलापन लिए हुए या भूरे रंग के होते हैं, मादा उल्लू के जिस्म पर धब्बे कुछ अधिक होते हैं, पैर औसतन बड़े और परों से ढके होते हैं, शिकारी परिन्दा होने के कारण पंजे और नाख़ून बड़े मजबूत होते हैं, परो का फैलाव साढ़े तीन फ़िट तक हुआ करता है, इनका वज़न ढ़ाई सौ ग्राम से लेकर 480 ग्राम तक होता है, नर की अपेक्षा मादा कुछ अधिक भारी होती है, इस प्रकार के उल्लू 16 प्रकार के होते हैं, इनमें से केवल तीन प्रजातियां हिन्दुस्तान में पाई जाती हैं। इस प्रजाति के उल्लू के नाम कुछ इस प्रकार हैं Monkey-faced owl, Ghost owl, Church owl और Death owl आदि।

2. ट्रू उल्लू (True owls):-

बार्न उल्लू से यह काफ़ी भिन्न होते हैं, इसका वैज्ञानिक नाम स्ट्रिजिना (Striginae) है वैसे तो इसकी 190 प्रजातियां होती हैं लेकिन इनमें केवल 23 प्रजातियां विशेष प्रकार की होती हैं जिनमें निम्नलिखित ही प्रसिद्ध हैं–

स्क्रीच उल्लू (Screech owl), हार्नड् उल्लू (Horned owl), और सह्वेट उल्लू (Saw-whet owl), इनकी शारीरिक संरचना विभिन्न प्रकार की होती है, बहुत छोटे और बौने उल्लू से लेकर भारी भरकम और विभिन्न रंगों में पाये जाते हैं, इस तरह के उल्लुओं का चेहरा गोल व बड़ा होता है और दुम छोटी होती है, इनके पर धब्बे दार होने के कारण बड़े शिकारी पक्षियों जैसे 'बाज़' आदि की नज़र इन पर जल्दी नहीं पड़ती, उल्लू अपने से छोटे पक्षियों का शिकार करता है और स्वयं को शिकार होने से बचाता है, चूहे, गिलहरी, ख़रगोश, कीड़े मकोड़े वगैरह किसानों के दुश्मन होते हैं परन्तु उल्लू उनको अपना भोजन बना कर करोड़ों का अनाज बचाता है और लोगों को आर्थिक लाभ पहुंचाता है इसलिए उल्लू किसानों का दोस्त कहलाता है, साधारणतयः इनकी आयु एक दो वर्ष ही होती है।

उल्लू छोटे शिकार को पूरा निगल जाता है, जो पदार्थ पच नहीं पाते जैसे हड्डियां, बाल व पर आदि का मिश्रण ठोस बेलनाकार के रूप में उगल देता है।

साधारणतयः उल्लू अपना घोंसला पेड़ों के ऐसे खोह में बनाते हैं जिनकी ऊँचाई पृथ्वी से लगभग बीस मीटर की ऊँचाई पर होता है, इसके अतिरिक्त खण्डहर या पुराने व वीरान मकानों, कुवें में भी घोसला बनाते हैं।

उल्लू के संबंध में अन्य बातों के अतिरिक्त एक गलत बात यह भी बोली जाती है कि 'क्या उल्लुओं की तरह दीदे नचा रहे हैं', जबकि उल्लू बेचारा अपनी आँखें घुमाने में अक्षम है अव केवल सामने देख सकता है परन्तु 270 डिग्री तक अपनी गर्दन घुमा कर एक स्थान से ही वह चारों ओर देख सकता है।

इसके शरीर के पर अन्य पक्षियों की तुल्ना में बहुत हलके और मुलायम होते हैं और इसी कारण जब यह उड़ता है तो इसके उड़ने की आवाज़ तनिक़ भी नहीं होती और यह आसानी से अपने शिकार पर झपट सकता है।

एक अनुमान के अनुसार 15 से 20 हज़ार वर्ष पहले उल्लुओं का सम्बन्ध मनुष्यों के साथ स्थापित हो चुका था जिसका साक्ष्य फ्रांस की गुफ़ाओं में चित्रित कलाकृतियों में मिलता है।

हिन्दू भाइयों की धार्मिक पुस्तक 'बाल्मिकी रामायण' में उल्लू को बहुत ही बुद्धिमान पक्षी माना गया है, लिखा है कि जब राम चन्द्र जी का रावण से युद्ध हो रहा था, इसी अवसर पर रावण के भाई विभीषण रामचन्द्र जी से आ कर मिले तो सुग्रीव समझे कि वह किसी चालाकी से आये हैं अतः उन्होंने राम चन्द्र जी से कहा कि उन्हें शत्रुओं की 'उलूक चतुराई' से बचना चाहिए, यह भी लिखा है कि ऋषियों मुनियों ने बहुत सोच समझ कर उल्लू को लक्ष्मी की सवारी बनाया है।

उल्लुओं की सुनने की शक्ति बहुत अधिक होती है परन्तु उनके कान दिखाई नहीं देते क्योंकि वे आँखों के पीछे परों के गुच्छे में छिपे होते हैं रात के अंधेरे में अपने शिकारी की हल्की ध्वनि से दिशा का अनुमान लगा कर उस पर आक्रमण कर देते हैं।

इनके पंजे विशेष प्रकार के होते हैं जिसमें चार नोकीली उंगलियां दो आगे और दो पीछे की ओर होती हैं, आवश्यकतानुसार पीछे वाली उंगलियों में से एक को घुमा कर आगे की ओर कर लेते हैं, इनकी चोंच अन्य मांसाहारी पक्षियों की तरह नोकीली और टेढ़ी होती है, परों से ढकी होने की वजह से चोंच का आकार छोटा दिखाई देता है।

उल्लू से सम्बंध रखने वाली सब से दिलचस्प बात यह है कि इनके समूह को अंग्रेज़ी में 'पार्लियामेन्ट' कहा जाता है (A group of owls is called a parliament).

विभिन्न देशों में उल्लू से सम्बन्धित कुछ दिलचस्प मान्यतायें-

० बर्तानिया में उल्लू के बोलने या उसके रोने की आवाज़ को मनहूस समझा जाता है।

० दक्षिणी अफ़्रीका में उल्लू की आवाज को किसी की मृत्यु का संकेत मानते हैं।

० कनाडा में तीन रात लगातार उल्लू के बोलने पर परिवार में किसी की मृत्यु होना निश्चित समझते हैं।

० अमरीका के दक्षिणी और पश्चिमी दोनों दिशाओं में उल्लू का देखा जाना अपशगुन समझते हैं।

० चीन में उल्लू के दिखाई देने पर पड़ोसी की मृत्यु का संकेत समझते हैं।

० ईरान में उल्लू की अच्छी आवाज़ को खुशी का संकेत और रोने जैसी आवाज़ को बुरा संकेत माना जाता है।

० तुर्की में भी उल्लू की आवाज़ को मनहूस ही समझा जाता है परन्तु सफेद उल्लू को शुभ समझा जाता है।

० भारत में घरों पर उल्लू का बैठ कर बोलना अच्छा शगुन नहीं समझा जाता परन्तु दीवाली में घरों पर खुशहाली

लाने के लिए, टोना टटका करने और स्वास्थ्य के लिए उल्लुओं कीं बलि चढ़ाई जाती है, समाचार पत्रों में इस प्रकार के समाचार भी पढ़ने को मिलते हैं कि 'गत वर्ष दीवाली के अवसर पर एक उल्लू तीस लाख का बिका'।

अक़्ल के अन्धे से कोई कहे कि तुम तीस लाख रूपये ग़रीबों में खर्च कर देते तो वह जीवन भर तुम्हारी जै जै कार करते और तुम्हारी भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते। इस प्रकार तुम्हारे सारे दुख दर्द दूर हो जाते और तुम स्वयं उल्लू बनने से बच जाते।

यह जान कर आप को निश्चय ही आश्चर्य होगा कि गुजरात में उल्लू की आँख का प्रयोग अपने भोजन के साथ इस विश्वास के साथ करते हैं कि इससे आँखों की रोशनी बढ़ती है, इसके मांस के अतिरिक्त गुर्दे और पाये भी बड़े मंहगे बिकते हैं। अंधविश्वासियों की पागलों जैसी आस्था ने इसकी नस्ल को समाप्त करने के कगार पर ला खड़ा किया है जबकि इनका जीवन एक दो वर्ष ही होता है, यद्यपि केन्द्र सरकार ने इस ओर अब ध्यान दिया है और इस प्रजाति को बचाने के लिए आवश्यक कार्यवाही हो रही है, लेकिन लोगों की आस्था का हाल यह है कि:—

1. उल्लू की आँख का काजल बनाकर लगाने से रात में भी दिन की तरह दिखाई देता है।
2. उल्लू के नाखून बच्चे के गले में बांधने से बच्चे को नज़र नहीं लगती।
3. उल्लू के मांस को तावीज़ में भर कर गले में बांधने से किसी प्रकर का भय नहीं रहता।
4. उल्लू की पूजा दीवाली में करने से लक्षमी जी प्रसन्न होती हैं और धन बरसता है।
5. उल्लू के पर बही—खातों में रखने से माल व दौलत बढ़ता है।
6. उल्लू का गोश्त किसी को खिलाने पर वह अधीन हो जाता है।

अंधविश्वासियों को यह मालूम होना चाहिए कि समय से पूर्व और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता।

एक लतीफ़ा भी सुनने में आया है कि एक महाशय को उल्लू की आवश्यकता थी तो वह लखनऊ के चिड़िया बाज़ार जो नक़्खास के नाम से प्रसिद्ध है, में गये और देखा कि एक चिड़ीमार कुछ छोटे बड़े उल्लू लिए बैठा है, उन्होंने एक बड़े और तंदुरुस्त उल्लू के दाम पूछे तो चिड़ीमार ने कहा दो हज़ार रूपये, उन्होने ने सोचा शगुन के लिए उल्लू छोड़ना है क्या आवयश्कता है इतना मंहगा उल्लू खरीदा जाये, एक छोटे उल्लू के दाम पूछने पर उसने पांच हज़ार रूपये बताये, वह सज्जन बड़े क्रोध से बोले 'अरे तुम क्या बोल रहे हो? इस बड़े उल्लू के दो हज़ार रूपये और टुइंया उल्लू के पांच हज़ार रूपये किस हिसाब से?

चिड़ीमार लखनवी अंदाज़ में बोला "अरे हुजूर! आप नाराज़ क्यों हो रहे हैं, इसकी विशेषता भी तो देखिए।

वह बदस्तूर नाराज़गी ओढ़े हुए बोले "क्या खूबी है इस पट्ठे में"?

चिड़ीमार बोला "वाह

हुजूर क्या खूब पहचाना, यही तो विशेषता है इसमें वह बड़ा वाला उल्लू तो केवल उल्लू है और यह उल्लू का पट्ठा है इसी कारण इसके दाम अधिक हैं।

उल्लू के नाम के साथ कई मुहावरे जुड़े हैं जैसे 'अपना उल्लू सीधा करना', 'उल्लू बनाना', 'काठ का उल्लू', 'उल्लू की तरह दीदे नचाना', 'उल्लू चतुराई', उल्लू का पट्ठा', उल्लू का ढक्कन', 'खाट पे बैठा उल्लू भर भर मांगे चुल्लू', 'उल्लू कहीं का', और 'उल्लूपना' आदि। इन मुहावरों का विवरण देने की आवश्यकता नहीं है जिस प्रकार उल्लू एक सीधा–सादा पक्षी है उसी प्रकार से उनसे सम्बन्धित मुहावरे भी आसान और सीधे–सादे हैं और लोगों के प्रयोग में रहते हैं।

आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि पाश्चात्य संगीत 'पाप–सांग' को पसंद करने वालों के लिए इन्टरनेट पर 'Owl City' नाम की वेबसाइट उपलब्ध है। अगर आप को संगीत में रुचि है तो इससे अपना नाता जोड़ सकते हैं। इसकी स्थापना अमरीका में 2007 ई0 में 'आदम यंग' नामक व्यक्ति ने किया था जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की चालीस योजनायें हैं।

मुझे विश्वास है कि उल्लू के बारे में जो भी ज्ञान आपके पास होगा उसमें कुछ न कुछ बढ़ोत्तरी अवश्य हुई होगी परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि अब उल्लू के बारे में कुछ बताने को बचा ही नहीं है, उल्लू को उर्दू शायरी में भी खूब प्रयोग किया गया है। 'बूम' उर्दू शब्द है और इसका अर्थ होता है 'उल्लू' मेरठ के एक शायर को उल्लू इतना पसंद था कि उन्होंने अपनी उपाधि 'बूम' रख कर 'बूम मेरठी' बन गये थे। 'शौक बहराइची' ने उल्लू पर बहुत से शेर लिखे लेकिन उनका निम्न शेर इतना मशहूर हुआ कि अब सारे संसार में पढ़ा जाता है।

बरबादिये गुलशन की खातिर
बस एक ही उल्लू काफ़ी था
हर शाख़ पे उल्लू बैठे हैं
अंजाम गुलिस्ता क्या होगा?

❖❖❖।

कुर्आन की शिक्षा.....

जिस्म की तरकीब के मुताबिक इकट्ठा की गयीं फिर उन पर गोश्त फैलाया गया और चमड़ा दुरुस्त हुआ फिर खुदा की कुदरत से अचानक उसमें जान आयी और उठ खड़ा हुआ और अपनी बोली बोला।

4. हज़रत उज़ैर अलै0 ने इस तमाम कैफियत को देखने के बाद फरमाया कि मुझ को खूब यकीन हुआ कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है यानी मैं जो जानता था कि मुर्दों को ज़िन्दा करना खुदा तआला को आसान है लेकिन अब अपनी आँख से देख लिया यह मतलब नहीं कि पहले यकीन में कुछ कमी थी बल्कि मुशाहिदा व अवलोकन न हुआ था, फिर हज़रत उज़ैर अलै0 यहाँ से उठ कर बैतुल मक़्दिस में पहुंचे किसी ने उनको न पहचाना क्योंकि यह तो जवान रहे और उनके आगे के बच्चे बूढ़े हो गये जब उन्होंने तौरेत ज़ुबानी सुनाई तब लोगों को उन का यकीन आया बुख्त नस्सर बनी इस्राइल की सारी किताबें जला गया था जिन में तौरेत भी थी।

❖❖❖

उर्दू सीखिये

शेष उर्दू अक्षरों के शोशे

—इदारा

خ، ح، چ، ج के शोशे समान होते हैं, बिन्दियों (नुक़्तों) के अन्तर से उनको पहचाना जाता है, यह आखिर तथा बीच लफ़्जों में एक ही जैसे होते हैं। उदाहरणः جل जल, چپ चुप, حد हद, بجل बजल, تحت तहत आदि।

ش، س के शोशे समान होते हैं, इनको चाहे तीन नोकों से लिखें चाहे सीधी पड़ी लकीर से, नुक़्तों से अंतर करेंगे जैसः— سب सब, شب शब, شر शर, پشم पशम, حشب हशब।

ض، ص के शोशे समान होते हैं, उन पर नुक़्ता न रखें तो ص और नुक़्ता रखने पर ض पढ़ेंगे जैसेः صر सर, ضر ज़र, بصر बसर, حضر हज़र आदि।

غ، ع के शोशे समान होते हैं नुक़्ते से अंतर किया जाता है, जैसेः— عن अन, غم ग़म अलबत्ता बीच लफ़्ज़ में इनका रूप बदल जाता है जैसे بعض बअ़ज़, بعد बअ़द, بغل बग़ल, چغل चुग़ल आदि।

ق، ف के शोशे समान होते हैंकेवल नुक़्तों से अंतर किया जाता है यह अंतिम तथा बीच लफ़्ज़ में एक ही जैसे होते हैं जैसेः قسم क़सम, فر फ़र, فر फ़र, صفر सफ़र, فقط फ़क़त आदि।

ل का शोशा आरम्भ में तथा बीच लफ़्ज़ में एक जैसा होता है जैसेः لا ला, لب लब, قلم क़लम, سلیم सलीम आदि।

م मीम का शोशा आरम्भ में इस प्रकार आता है। ما मा, مب मब, من मन, परन्तु बीच लफ़्ज़ में थोड़ा बदल जाता है जैसे جمل जमल, چمل चमल, حمد हम्द, سمر समर आदि।

گ، ک के शोशे समान होते हैं अलबत्ता گ पर एक लकीर और होती है यह आरम्भ तथा बीच लफ़्ज़ में एक ही जैसे होते हैं। जैसे کب कब, کج कज, گپ गप, گچ गच, شکر शुक्र, شکن शिकन, مگر मगर, جگر जिगर आदि। अलबत्ता گ، ک के शोशे ا और ل में मिलाते समय थोड़ा बदल जाते हैं जैसे کا का, گا गा, کل कल, گل गुल, جنگل जंगल, منگل मंगल, چکلا चकला आदि।

पढ़िये— جنگل जंगल, چکلی चुकली, حکیم हकीम, کچلا कुचला, شربت शरबत, سرپٹ सरपट, مشرب मशरब, نصرت नुसरत, صرصر सरसर, ضرر ज़रर, مضر मुज़िर, عامر आमिर, غافل ग़ाफ़िल, غفلت ग़फलत, فقیر फ़क़ीर।

उर्दू में तीन नोकों से एक चिन्ह बनाया जाता है उसको तशदीद कहते हैं यह चिन्ह जिस हर्फ पर होता है उसको दो बार पढ़ते हैं पहली बार साकिन (गतिहीन) दूसरी बार मुतहर्रिक (गतिशील) जैसे چکّر चक्कर, شبّر शब्बर, کھچّر खच्चर आदि।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

मोदी को आयोग के समक्ष तलब करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं: नानावती—

अहमदाबाद। गुजरात में वर्ष 2002 में हुए सांप्रदायिक दंगों की जांच कर रहे न्यायिक आयोग ने कहा कि गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को, उन पर लगाए गए आरोपों के सिलसिले में आयोग के समक्ष पूछताछ की खातिर तलब करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं। आयोग के अध्यक्ष, उच्चतम न्यायालय के अवकाशप्राप्त न्यायमूर्ति जी टी नानावती ने मोदी को तलब न किए जाने के कारणों के बारे में पूछने पर पीटीआई को बताया "उन्हें (मोदी को) सम्मन जारी नहीं किया गया या उन्हें हमारे समक्ष पेश होने के लिए नहीं कहा गया क्योंकि उन पर मोदी पर लगाए गए आरोपों के पक्ष में हमारे पास कुछ सबूत होने चाहिए। इसलिए हमें यह उचित नहीं लगा कि उन्हें आयोग के समक्ष पेश होने और हमारे (द्वारा पूछे जाने वाले) सवालों के जवाब देने के लिए कहा जाए।" बहरहाल, नानावती ने इस बारे में बेहद संतुलित जवाब दिया कि इसका मतलब है कि आयोग ने उस व्यक्ति को क्लीन चिट दे दी जिसे जांच निकाय ने पूछ ताछ के लिए नहीं बुलाया।

पाक की बात करने वाले को देश में रहने का हक नहीं: योगी—

अवधूत योगी महासभा के सभापति सांसद योगीराज आदित्यनाथ ने कहा कि पाकिस्तान कीबात करने वाले किसी भी व्यक्ति को भारत में रहने का अधिकार नहीं है।

कश्मीर में भाजपा की सरकार आने का दावा करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार बनाने के बाद धारा 370 पर तुरंत कार्रवाई होगी।

हिन्दुओं को नहीं मिल रहा हक—

विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ0 प्रवीण भाई तोगड़िया ने कहा कि भारत हिन्दुओं का देश है। इस देश के हिन्दुओं को उनका समुचित हक़ नहीं मिल रहा है। हिन्दू कमज़ोर होते जा रहे हैं। हिन्दुओं को कमजोर होने से जहां गौ की पूजा होती है वहीं उसकी हत्या हो रही है।

चुनाव में न उठायें 370 का मुद्दा: राजनाथ सिंह—

संविधान के अनुच्छेद 370 को हटाने को राष्ट्रीय मुद्दा करार देते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने आज कहा कि यह बहस का मुद्दा है और इसे विधानसभा चुनाव के दौरान वोट बैंक की राजनीति के लिए नहीं उठाया जाना चाहिए। सिंह ने किश्तवाड़ के सुदूर पद्दार क्षेत्र में एक जन सभा में कहा यह (अनुच्छेद 370) एक राष्ट्रीय मुद्दा है। यह बहसयोग्य है। इस पर भाजपा का रुख स्पष्ट है। विधानसभा चुनाव के दौरान इस मुद्दे को उठाने की कोई ज़रूरत नहीं है।

❖❖❖